वेदों की ओर लौटो।

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

।।ओ३म्।।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

● वर्ष : १७ ● अंक : ४ ● १० अप्रैल २०१७

ज्येष्ठ आर्य विद्वद्, उपदेशक, गुरुकुल स्नातिका व आर्यसेवक गौरव समारोह-२०१७
-: चित्रमय झलकियाँ :-

आर्य कृतज्ञता गौरव समारोह, लातूर २०१७

प्रान्तीय सभाद्वारा लातूर में आयोजित ÷आर्य कृतज्ञता गौरव समारोह' के अध्यक्ष पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी का सम्मान करते हुए सभामन्त्री श्री माधवरावजी देशपांडे ।

समारोह के प्रमुख मार्गदर्शक प्रसिद्ध विचारक, पूर्व सांसद डॉ.श्री जे.एम.वाघमारे का सम्मान करते हुए सभा प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी ।

मुख्यातिथि प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं.श्री मोहितजी शास्त्री(बिजनौर-उ.प्र.) का सम्मान करते हुए सभा के उपप्रधान श्री राजेंद्रजी दिवे।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११८ | कलि संवत् ५११८ | विक्रम संवत् २०७४

दयानन्दाब्द १९४ | चैत्र | १० अप्रैल २०१७

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५११९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर**(९८८१२१५६१६), **प्रा.सत्यकाम पाठक**(९९७०५६२३५६), **ज्ञानकुमार आर्य**(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

* हिन्दी विभाग *

१) श्रुतिसुगन्ध ०४
२) आखिर दयानन्द से परहेज क्यों? (सम्पादकीय)....... ०५
३) महाराष्ट्र की महनीय आर्य गौरव विभूतियां ०७
४) शोकसमाचार १८

* मराठी विभाग *

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) अशाने देश चालणार नाही ×........ २०
३) आर्य समाज कसा वाढेल ? २४
४) १९ आर्य विभूतींचा सभेतर्फे गौरव (वृत्तांत)....... २८
५) वार्ता विशेष ३१
६) शोकवार्ता ३४

*** प्रकाशक ***
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

*** मुद्रक ***
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा ।

श्रुतिसुगंध

आप्त विद्वान सत्कारणीय

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि।

तितिक्षन्तेऽअभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः।।

पदार्थान्वय– हे **(इन्द्र)** सभाध्यक्ष राजन्× जो**(सोम्यासः)** ऐश्वर्य होने में उत्तम स्वभाववाले**(सखायः)**मित्र हुए**(सोमम्)** ऐश्वर्यादि को**(सुन्वन्ति)** सिद्ध करते**(प्रयांसि)** चाहने योग्य विज्ञानादि गुणों को**(दधति)** धारण करते और **(जनानाम्)** मनुष्यों के**(अभिशस्तिम्)**दुर्वचन वाद-विवाद को **(आ, तितिक्षन्ते)** अच्छे प्रकार सहते हैं, उनका आप निरन्तर सत्कार कीजिए। **(हि)** जिस कारण**(त्वत्)** आपसे**(प्रकेतः)** उत्तम बुद्धिमान् **(कः, चन)** कोई भी नहीं है, इससे**(त्वा)** आपको सब लोग**(इच्छन्ति)** चाहते है। **(यजु.३४/१८)**

भावार्थ – जो मनुष्य इस संसार में निन्दा-स्तुति और हानि-लाभादि को सहनेवाले पुरुषार्थी सबके साथ मित्रता का आचरण करते हुए आप्त हो, वे सबके सेवने और सत्कार करने योग्य हैं तथा वे ही सबके अध्यापक और उपदेशक होंवे। **(महर्षि दयानंद कृत यजुर्वेद भाष्य से साभार)**

प्रान्तीय सभा द्वारा महाराष्ट्र में चार स्थानों पर

मानवता संस्कार एवम् आर्य वीरदल शिविर

सभी को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि, आगामी ग्रीष्मावकाश में लडकों एवं कन्याओं के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक विकास के लिए स्वतंत्र रुप से निम्न चार स्थानों पर मानवता संस्कार शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों से बच्चे-बच्चियों का नवनिर्माण होगा।

१) दि.२ से ९ मई २०१७-आर्य वीरांगना-मानवता संस्कार शिविर -औरंगाबाद

२) दि.१० से १६ मई २०१७-मानवता संस्कार व आर्यवीर दल शिविर-शहापुर ता.देगलुर

३) दि.१७ से २३ मई २०१७-मानवता संस्कार व आर्यवीर दल शिविर-उमरगा

४) दि.२४ से ३०मई २०१७-प्रान्तीय मानवता संस्कार व आर्यवीर दल शिविर-लातूर

सभी पालक अपने बच्चे-बच्चियों को शिविरों में अवश्य भेजें ।-संयोजक,शिविर

संपादकीयम्

आखिर दयानन्द से परहेज क्यों ?

प्रायः यही देखा जाता है कि सैद्धान्तिक आधार पुरजोर न होने से समाज के प्रस्थापित कई विचारक लोग महापुरुषों का गौरव तो करते हैं, किन्तु उनके विचारों पर आचरण नहीं करते । इनमें एक पक्ष उनका होता है, जिन्हें कि दूसरे विचारों की जानकारी होते हुए भी जानबुझकर अपने निजी विचारों पर दृढ रहते हैं और दूसरों के विचारों का उपयोग केवल अपने लाभों के लिए ही करते हैं। दूसरा पक्ष उनका होता है, जिन्हें यही पता नहीं होता कि कौन से विचार सही है और कौन से विचार गलत हैं ? सभी के विचार उन्हें एकसमान ही नजर आते हैं । या यूं कहिए कि इस बारे में वे ढूलमूल नजर आते हैं। इन दोनों पक्षों से विशेष सुधारात्मक काम नहीं बनता ।

आर्य समाज और महर्षि दयानन्द को लेकर आज यही दिखाई पडता है। जब कभी प्रसंग आता है, तब तथाकथित राजनेता व विचारविद् आर्य समाज व दयानन्द का मूल्यमापन करते हुए जो उन्हें जैसा अनुभूत होता है, उसी नुसार वे अपने वक्तव्य देते हैं। इससे उनका अध्ययन व चिन्तन अल्पसा सिद्ध होता है। लेकिन उनके इस मूल्यमापन से मूलभूत विचार लोगों तक नहीं पहुंचते और अधूरा ही सन्देश प्रसारित होता है।

प्रश्न यह उपस्थित होता है कि आर्य समाज व दयानन्द के बाद में आज तक के जिन-जिन महापुरुषों ने जो बयान दिये और सम्प्रति भी दिये जा रहे हैं, क्या उनके कहने मात्र से दयानन्द व आर्य समाज की महत्ता बढी है ? हम अल्पसन्तुष्ट आर्यजन भी बडे चाव से उनके कथन मात्र को प्रमाण समझकर गौरव मान बैठते हैं । यदि उनकी दृष्टि में दयानन्द महान है व आर्य समाज की विचारधारा सर्वश्रेष्ठ है, तो फिर उन्होंने इसे समग्र रुप से आत्मसात करने का प्रयत्न क्यों नहीं किया? यदि वे सब आर्य विचारों के अनुगामी बनतें और अन्य विचारों के साथ समझौता न करते तो, आज इतिहास कुछ और होता। उनकी यह अस्वीकृति यही सिद्ध करती है कि, आर्य समाज की विचारधारा में उन्हें पूर्णतया विश्वास नहीं है । और यदि पूरा विश्वास ही होता तो, फिर वे दूसरे विचारों को क्यों ग्रहण करते ? फिर चाहे इनमें म.गांधी हो, तिलक हो, सावरकर हो, या स्वन्तन्त्रता के बाद सभी राजकीय व सामाजिक नेता क्यों न हो? आर्यसमाज के कई सिद्धान्त जो कि उन्हें मान्य नहीं हैं और आर्य सदस्यों की शिथिलता को देखकर आज भी कई प्रस्थापित लोग केवल दूर ही रहना पसंद करते हैं । तब हमें कवि के शब्दों में यही महसूस होता है - **+दूर से राह तो सभी दिखाते हैं, पर साथ कोई चलता नहीं।'** सही अर्थों में आर्य समाज के न बढने का एक कारण यह भी हो सकता है ।

हाल ही में देश के पाँच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा ने भारी जीत

हासिल की। विशेषतः उत्तरप्रदेश में ३०० से अधिक सीट लेकर भाजपा की विजय हुई और प्रखर हिन्दुत्ववादी साधु नेता योगी आदित्यनाथ मुख्यमन्त्री पद पर आसनस्थ हुए। योगीजी का उ.प्र. के पूर्वांचल में बहुत बडी शक्ति व प्रतिष्ठा है। हिन्दू रक्षा वाहिनी नामक संगठन भी वे चलाते हैं। ऐसे युवा परिव्राट् का मुख्यमन्त्री होना सभी के लिए शुभसंकेत हैं। अब उनपर ÷सर्वे भवन्तु सुखिनः।' के अनुसार सम्पूर्ण प्रजा का निष्पक्ष भाव से कल्याण करने की जिम्मेदारी है। मानवतावादी दृष्टिकोन अपनाते हुए वे अपनी छवी को सभी प्रजाजनों के हृदय में स्थान दिलाते व वेदानुमोदित विचारों को स्वीकार करते हैं, तो निश्चित ही उनका मुख्यमन्त्री बनना सार्थक सिद्ध होगा ।

एक बार दिल्ली में आयोजित आर्य महासम्मेलन में श्री योगी आदित्यनाथ वक्ता के रुप में आमन्त्रित थे। अपने भाषण में आर्य समाज की प्रशंसा करते हुए कहा था -÷शुद्धि संस्कार के लिए उन्हें आर्य समाज गोरखपूर का काफी सहयोग मिला था।' अन्य एक प्रसंग में निजी टी.वी.चैनल पर साक्षात्कार में उन्होंने **÷सत्यार्थ प्रकाश'** के तेरहवें व चौदहवें समुल्लास का उल्लेख कर महर्षि दयानन्द के प्रति गौरवपूर्ण उद्गार भी निकाले थे । लेकिन उनका यह कथन दयानंद व आर्य समाज के प्रति अधूरा सिद्ध होता है । इतना क्रियाशील व युवा सन्यासी जो आर्यसमाज व दयानंद के समग्र क्रांतिकारी विचारों से अनभिज्ञ हो ? यह कैसे सम्भव है ? उन्हें क्या **÷सत्यार्थ प्रकाश'** के आरंभिक दश समुल्लास और एतद्देशीय पाखण्ड की समीक्षा करनेवाले ग्यारहवे समुल्लास के बारे में क्या जानकारी नहीं थी? यह चिन्तन का विषय है ।

गुजरात की भूमि में जन्में देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी को इसी प्रान्त के महापुरुष म.गांधी के नाम से देश में ÷राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान' चला रहे हैं। सरदार पटेलजी का विशाल स्मारक भी खडा हो रहा है। लेकिन ... उसी गुजरात की भूमि में उदित हुए वैदिक प्रज्ञासूर्य महर्षि दयानन्द को वे विशेष याद नहीं करते । स्वतन्त्रता दिवस पर लाल कीले के प्राचीर से स्वामी विवेकानन्द का गौरव करते हैं, किन्तु स्वामी दयानन्द का उन्हें स्मरण तक नहीं होता। साथ ही दयानन्द के विशुद्ध वैदिक मन्तव्यों का देश के सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय उत्थान में उपयोग करने की कभी बात तक नहीं करते। रही बात स्वामीजी के संगठन ÷आर्य समाज' को याद करने की × जिस आर्य समाज के कारण देश को स्वतन्त्रता मिली तथा सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक उत्थान में सर्वोपरि भूमिका रही, उसका स्मरण कर उसके संवर्धन पर जब बाबा रामदेवजी कभी चर्चा तक नहीं करते, तब अन्यों से क्या अपेक्षा रख सकते हैं ? चिन्ता इस बात की है कि, महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के प्रति प्रस्थापितों की बढती उपेक्षा व उनके विचारों का परहेज कहीं देश की सर्वोन्नति में बाधक न बनें ? **- नयनकुमार आचार्य**

प्रान्तीय सभाद्वारा लातूर में गौरवान्वित

महाराष्ट्र की महनीय आर्य विभूतियां

- प्रा.अरुण चव्हाण

अपने लिए जिये तो क्या जिये ।
जीना तो है उन्हीं का,
जो जिये औरों के लिए ।।

समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण व सुधार हेतु **÷आर्य समाज'** यह वैश्विक संगठन विगत १४३ वर्षों से कार्यरत है । स्थान-स्थान पर इसके अनुयायी वैदिक सिद्धान्तों का बडी निष्ठा के साथ पालन करते हुए वाणी व लेखनी के माध्यम से इस कार्य में संलग्न हैं। जिन्होंने सन्त-सुधारकों व वीरों की पावन भूमि महाराष्ट्र में जन्म लिया, वैदिक विचारों को जीवन मे उतारा और इसी भूमि को कर्मक्षेत्र बनाकर आजीवन सर्वतोमना ऋषिमिशन में जुट गये, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा गत कईं वर्षों से गौरव समारोह का आयोजन करती है । गत वर्ष सोलह आर्य सेवकों का स्मृति गौरव तथा अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ। इस वर्ष भी लगभग १९ आर्य विभूतियों का गौरव आर्य समाज गांधी चौक, लातूर के वार्षिकोत्सव पर दि.१५ मार्च २०१७ को बडे उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ । जिन आर्य विभूतियों का सम्मान किया गया, उनमें कईं शिक्षा क्षेत्र की प्रसिद्ध हस्तियां हैं। विभिन्न शिक्षालयों में प्राचार्य, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष आदि पदों पर रहकर उन्होंने प्रभावशाली प्रशासन के साथ ही विद्यादान का पवित्र कार्य किया है । अध्यापन के साथ ही लेखन, व्याख्यान, पत्रकारिता, वेदप्रचार आदि कार्य में भी वे संलग्न रहे। संस्कृत, मराठी, हिंदी भाषा के साहित्यकार, अनुवादक, लेखक, गवेषक आदि के रुप में भी उन्होंने सेवाएं दी हैं। कुछ गुरुकुल के स्नातक वेदोपदेशक बनकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे । कुछ आर्य सेवक ऐसे हैं, जिन्होनें स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया तथा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सराहनीय भूमिका निभाई। उस जमाने में कन्याओं को पढाने की परम्परा नहीं थी, फिर भी माता-पिता ने अपनी कन्याओं को गुरुकुलों में भेजकर उन्हें संस्कृत, वेद व व्याकरण की विदुषी बनाने का पवित्र कार्य किया।

इन सभी महनीय हस्तियों का प्रान्तीय सभा ने गौरव कर उनके प्रेरक जीवन व कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है । इनमें से जो लोग दिवंगत हो चुके, उनका स्मृतिगौरव तथा जो जीवित है

उनका हार्दिक सम्मान किया गया। सत्कृत सभी गौरवमूर्तियों का संक्षिप्त जीवन परिचय निम्न रुप से है-

१) शिक्षाविद् डॉ.जनार्दरावजी वाघमारे

समग्र देश में एक लब्धप्रतिष्ठ विद्वन्मनीषी, शिक्षाविद्, कुशल प्रशासक व वेदानुमोदित प्रगतिशील विचारधारा के **÷पथिक'** के रुप में, जिनकी विशेष ख्याति है, ऐसे पं.नरेन्द्रजी के अनुपम शिष्य, पूर्व सांसद डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे हम सब के लिए सम्मान्य प्रेरणास्त्रोत हैं । वाणी व लेखनी से समग्र मानवजाति का पथप्रदर्शन करनेवाले श्री वाघमारेजी का छात्रजीवन आर्यसमाजी विद्वानों के सान्निध्य में व्यतीत हुआ। उस समय लातूर के गांधी चौक आर्यसमाज में आयोजित सभा सम्मेलन एवं साप्ताहिक सत्संग में आप सदैव जाते रहे। अनेकों विद्वानों के व्याख्यान सुनकर आपमें परिवर्तन की विचारधारा प्रवाहित हुई। पू.उत्तममुनिजी एवं पं.नरेन्द्रजजी का विशेष मार्गदर्शन आपको मिलता रहा। फलस्वरुप आपपर आर्यविचारों की विशेष छाप रही। आपकी शिक्षा उस्मानिया विश्व विद्यालय, हैद्राबाद में हुई। १९७० से १९९४ तक आप लातूर के राजर्षी शाहु महाविद्यालय में प्राचार्य के रुप में कार्यरत रहें। आपके निर्देशन में इस महाविद्यालय ने चहुंमुखी प्रगति की है। सम्पूर्ण महाराष्ट्र में **÷लातूर पॅटर्न'** आपके ही कारण प्रसिद्ध हुआ। १९९४ में नांदेड में स्थापित स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय के प्रथम उपकुलपति का भार आपने बहुतही उत्तम प्रकार से सम्भाला और इस ज्ञानतीर्थ को सुविकसित किया । तत्पश्चात् लातूर के नगराध्यक्ष के रुप में आपने नागरिकों की सेवा की। स्वच्छ प्रतिमा के राजनेता के रुप में भी आपकी विशेष छाप रही है। इसी कारण आप राज्यसभा के सदस्य बन गये और संसद में आपने चिंतन पर विचार रखे। यूनो में भी आपने अपने विचारों से सभी को प्रभावित किया । अपने विचारों व कार्यों का मूलभूत आधार आप आर्य समाज को ही मानते हैं । स्वयं के साथ ही परिवार के सभी सदस्यों के अन्तर्जातीय विवाह कराये। घर के सभी धार्मिक संस्कार भी आर्य समाज पद्धति से ही होते हैं।

२) प्राचार्य वेदमुनिजी वेदालंकार

पू.उत्तममुनिजी जैसे तपस्वी विद्वान् के पुत्र होने से बचपन से ही आप पर आर्य समाज के संस्कारों की विशेष छाप रही है। गुरुकुल कांगडी में संस्कृत, व्याकरण पढकर आप वेदालंकार बन गये। आग्रा व हैदराबाद में आपकी उच्च शिक्षा (एम.ए.-संस्कृत व

हिंदी) हुई। शिक्षा के प्रश्चात् महाराष्ट्र के विभिन्न महाविद्यालयों में प्रोफेसर, प्राचार्य, तथा विद्यापीठ के डीन आदि पदों पर रहकर विद्यादान व प्रशासन का कार्य किया है। साथ ही अनुवाद के क्षेत्र में भी अपने प्रशंसनीय कार्य किया है । लगभग ३४ मराठी ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद कर साहित्य क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया। आपको आजतक ६-७ पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इसके साथ ही वैदिक व्याख्याता, पुरोहित, प्रचारक व साधक के रुप में भी कार्यरत हैं।

३) प्राचार्य डॉ.चन्द्रकान्तजी गर्जे

हुतात्मा धर्मप्रकाश के पावन बलिदान से पुनीत बस्वकल्याण(कर्नाटक) नामक गाँव में एक कृषक परिवार में जन्म लेनेवाले श्री चंद्रकांतजी गर्जे की उच्चशिक्षा अलाहाबाद (उ.प्र.) में हुई। शिक्षा-दीक्षा के पश्चात् आप क्रमश: परली, किनवट आदि स्थानों पर प्रोफेसर एवं प्राचार्य पद पर आसीन हुए और हिन्दी का अध्यापन उत्तम रीति से किया। नासिक के यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ के संचालक पद पर रहकर भी आपने कार्य किया। सन २००२ में निवृत्त होने के पश्चात् आप लेखन एवं व्याख्यान कार्य में जुट गये। अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित हो चुके हैं। विभिन्न स्थानों पर आयोजित राष्ट्रीय चर्चासत्रों में आपने भाग लिया। आज तक आपने लगभग चार ग्रन्थों का प्रणयन किया है। वैदिक विचारों को जनसामान्यों तक पहुँचाने में आप प्रयत्नशील है। आर्य जगत् के हिन्दी व मराठी साहित्यिक, लेखक, अनुवादक के रुप में आप जाने जाते हैं। स्वयं के साथ ही आपने कन्या व पुत्रों के भी अन्तर्जातीय विवाह करवाये। क्रान्तिकारी आर्यनेता श्री शेषरावजी वाघमारे के आप दामाद हैं।

४) प्राचार्य देवदत्तजी तुंगार

महाराष्ट्र के ज्येष्ठ आर्य पत्रकार के रुप में श्री देवदत्तजी तुंगार जाने जाते हैं। महर्षि दयानन्द के अनुपम शिष्य व वैदिक विचारधारा के संवाहक होने का सौभाग्य आपको प्राप्त है। पिता श्री हरि सखाराम तुंगार, जो कि रा.शाहू महाराज के नेतृत्व में आर्य समाज कोल्हापुर के मंत्री थे। इन्हीं के संस्कारों की छत्रछाया में पलकर आप में वैदिक धर्म का विचार दृढ हो गया। पिता की भाँति आप प्रखर सिद्धान्तवादी आर्यसमाजी हैं। नांदेड के पीपल्स कॉलेज व यशवंत महाविद्यालय में आप अर्थशास्त्र विषय के प्राध्यापक रहे। कुछ वर्ष देवगड वेंगुर्ला(पुणे) व रोहा (रायगड) में प्रोफेसर व प्राचार्य के रुप में आपने सेवाएँ दी।

अध्यापन के साथ ही आप की पत्रकारिता बहुत ही प्रभावशाली है। आजतक दै.लोकसत्ता, दै.गावकरी, दै.मराठा, दै.केसरी, दै.मराठवाडा आदि १६ प्रसिद्ध अखबारों में आपके चिंतनशील लेख व समाचार प्रकाशित हो चुके हैं। नांदेड के एम.जी.एम.महाविद्यालय में छह वर्ष तक पत्रकारिता विषय के प्राध्यापक एवं स्वा.रा.ती.मराठवाडा विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग के प्रमुख के रुप में आपने उत्तम प्रकार से कार्य किया । आपने स्वयं का व परिवार का अन्तर्जातीय विवाह कर समाज के सामने आदर्श स्थापित किया। सम्प्रति आर्य समाज नांदेड के मार्गदर्शक तथा प्रान्तीय सभा के उपमन्त्री का कार्यभार आपपर है।

५) प्राचार्य गोविंदरावजी मैंदरकर

हिन्दी आर्य साहित्य को मराठी भाषा में लानेवाले प्रसिद्ध अनुवादक के रुप में प्राचार्य श्री गोविंदरावजी मैंदरकर पहचाने जाते हैं।

हैदराबाद एवं नागपुर में उच्च शिक्षा पूर्ण कर आप उस्मानाबाद के शासकीय अध्यापक महाविद्यालय में लगभग ३६ वर्षों तक प्राचार्य के पद पर रहे। प्रशासन एवं अध्यापन के साथ ही लेखन क्षेत्र में भी अपने काफी योगदान दिया। अनेकों हिन्दी, मराठी अखबारों में आपके अनूदित लेख प्रसिद्ध हो चुके है। उपनिषद, दर्शन, विशुद्ध मनुस्मृति, गंगाज्ञानसागर तथा अन्य लगभग २४ ग्रन्थों का व लेखों का मराठी में अनुवाद कर आपने पाठकों की ज्ञानतृषा को शांत किया है। वेदवाणी मासिक में आपके लगभग ४० लेख प्रकाशित हो चुके हैं । डॉ.सुरेंद्रकुमारजी द्वारा संशोधित ÷विशुद्ध मनुस्मृति' का मराठी अनुवाद प्रकाशन के मार्ग पर है ।

६) सौ.सवितादेवी बलवंतराव जोशी

प्रखर वैदिक धर्मी पिता पू.उत्तममुनिजी के संस्कारों में बचपन से ही पलकर सौ.सवितादेवी का जीवनपथ प्रशस्त हुआ है।

अध्यापिका बनकर आपने जहाँ छात्रों में सुसंस्कारों का बीजारोपण किया, वहीं वैदिक साहित्य का मराठी में अनुवाद कर उसे मराठी परिवारों में फैलाया है। आजतक आपने यजुर्वेद व ऋग्वेद के महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का मराठी में अनुवाद किया है। साथ ही दै.सामना, दै.तरुण भारत इन अखबारों में भी वेदमन्त्रों की व्याख्याएँ प्रकाशित हो चुकी है । कई मराठी वैदिक साहित्य का स्वयं के खर्चे से ही प्रकाशन कर आपने तथा आपके परिवार ने वैदिक धर्म की सेवा की है । कई वर्षों से आप आर्य समाज सम्भाजीनगर की उपप्रधाना पद पर हैं। वैदिक साहित्य के साथ ही अन्य

दार्शनिक ग्रन्थों का भी आपने मराठी में अनुवाद किया है। बढती आयु में भी आप बडे उत्साह के साथ ऋषि दयानंद के विचारों का प्रचार वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशन के माध्यम से कर रही हैं । आपके इन कार्यों में पतिदेव श्री बलवंतरावजी एवं परिवार का बहुत बडा सहयोग प्राप्त है ।

७) ज्ञानकुमारजी आर्य

मराठवाडा विभाग में कट्टर वैदिक धर्मी तथा परिवर्तनवादी आर्य समाजी के रुप में अपनी विशेष पहचान बनानेवाले श्री ज्ञानकुमारजी आर्य मराठी लेखक, अनुवादक, संपादक, व्याख्याता, पुरोहित व पदाधिकारी के रुप में बडी तन्मयता के साथ सेवा दे रहे हैं । अपने भ्राता श्री माणिकरावजी भोसले के सान्निध्य से आप वैदिक धर्मी बनें । वैदिक विचारों का तन्मयता से पालन करते हुए आप एक क्रियाशील आर्य कार्यकर्त्ता बन गये। जीवनभर अध्यापक बनकर आपने निष्ठापूर्वक अध्ययन व अध्यापन किया है। आपके लेख विभिन्न मराठी व हिन्दी अखबारों में प्रकाशित हुए तथा कई ग्रन्थों का आपने सम्पादन भी किया है। आर्य समाज रामनगर लातूर के नवनिर्माण में आपकी सक्रिय भूमिका रही है। सम्प्रति आप इस संस्था के मंत्री के रुप में कार्यरत हैं । स्वयं के साथ ही सम्पूर्ण परिवार का अन्तर्जातीय विवाह कर समाज के सम्मुख आपने ऊँचा आदर्श प्रस्थापित किया है। संस्कृत के प्रचार व प्रसार में भी आपका काफी योगदान रहा है। आपकी संस्कृत सेवा के फलस्वरुप महाराष्ट्र शासन ने आपको ÷कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार' से गौरवान्वित किया। राज्य पाठ्यक्रमिक मंडल के सदस्य रुप में भी आपने सेवा दी है। सा.लातूर समाचार व मा.वैदिक गर्जना इन पत्रिकाओं के आप सहसंपादक हैं। पुरोहित के रुप में स्थान-स्थान पर पहुँचकर वैदिक सोलह संस्कारों का प्रचार भी करते है।

८) स्व.दिगंबररावजी लिं. होळीकर

शिक्षा के प्रचार व प्रसार में अनोखे त्याग व समर्पित भाव से कार्य करनेवाले दिवंगत श्री दिगंबररावजी होलीकर गुरुजी का नाम बडे गौरव के साथ लिया जाता है। आरम्भ से ही प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करते हुए आपने शिक्षा पाई। कर्म व वचन के पक्के, प्रखर सत्यानुगामी, सिद्धान्तवादी व सामाजिक कार्यकर्ता के रुप में आपको जाना जाता है। उच्च शिक्षा के पश्चात आपने काँग्रेस सेवा दल में प्रचारक के रुप में बडी निष्ठा से कार्य किया। देश के कई स्थानों पर घूमकर समाज में देशभक्ति का वातावरण निर्माण किया।

तत्पश्चात् महाराष्ट्र में आकर अपसिंगा के राष्ट्रीय नरेंद्र विद्यालय में मुख्याध्यापक के रुप में कार्य किया । इस विद्यालय को कई एकड जमीन दिलवाकर आर्थिक दृष्टि से सक्षम बनाया। उसके पश्चात् हिंगोली में आर्यसमाज द्वारा स्थापित आर्य विद्यालय के नवनिर्माण में योगदान दिया। बाद में उदगीर में भाई श्यामलाल स्मारक विद्यालय में आजीवन मुख्याध्यापक के रुप में बडी निष्ठा से कार्य किया।

इन सभी संस्थाओं को श्री होलीकरजी ने तन-मन-धन से संवर्धित कर इनकी प्रतिष्ठा को बढाया है। उत्तम प्रशासन के साथ ही आदर्श अध्यापन द्वारा अध्यापक तथा छात्रों को प्रोत्साहन देते रहे। वे प्रचलित जातिव्यवस्था एवं अंध:विश्वास के घोर विरोधी थे। अपनी तीनों कन्याओं के विवाह उन्होंने जाति-पाती के बंधनों को तोडकर किये। श्री होलीकरजी एक चरित्रवान व्यक्ति होने के साथ ही सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों में सदैव अग्रणी रहे हैं। देश की आजादी के लिए आपने स्वतन्त्रता संग्राम में भी भाग लिया किन्तु उन्होंने सरकार की पेन्शन स्वीकार नहीं की। सभी प्रकार के प्रलोभनों से दूर रहे। असैद्धांतिक विचारों के साथ कभी समझौता नहीं किया। वे मानवतावादी विचारों के प्रखर अनुगामी रहे। आपद्वारा शिक्षा क्षेत्र में दिये गये अतुलनीय योगदान को देखकर महाराष्ट्र शासन ने आपका आदर्श अध्यापक व मुख्याध्यापक के रुप में सम्मान भी किया। अन्तिम क्षणों तक आप निडर, धैर्यशाली, प्रखर सिद्धांतवादी बनकर जिये। प्रसिद्ध विचारक श्री डॉ.जे.एम.वाघमारे आपको ज्येष्ठ भ्राता के रुप में मानते हैं।

९)स्वा.सै.(स्व.)वासुदेवरावजी होळीकर

लातूर जिले के आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं एवं राष्ट्रभक्तों की श्रृंखला में स्वा.सै.वासुदेवरावजी होलीकर का नाम बडे गौरव के साथ लिया जाता है। होली व पानचिंचोली ग्राम परिसर में पहले से ही आर्यसमाज का प्रभाव रहा है। फलस्वरुप यहाँ पर कट्टर वैदिकधर्मी व स्वतन्त्रता सेनानियों ने विशेष कार्य किया। श्री होलीकरजी भी इन्ही में से एक रहे हैं।हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम व हिन्दी सत्याग्रह में आप अपने मित्रों के साथ सम्मिलित हुए। ६ माह तक आपने सिकंद्राबाद व गुलबर्गा में कारावास की सजा भोगी। इसी दौरान सेनापति वसंत बापट का भी आपको सान्निध्य मिला।

उस समय होली ग्राम में वैचारिक परिवर्तन की धारा बहने लगी और अनेकों लोग जाति प्रथा के विरोध में खडे हुए। अपने परंपरागत उपनाम(कुलनाम) को त्यागकर ग्रामकुलीन नामों को धारण करने

की परंपरा शुरु हुई। इस में श्री वासुदेवरावजी भी सम्मिलीत हुए। अपना **कुलकर्णी** उपनाम त्यागकर **होलीकर** यह उपनाम धारण किया। इतना ही नहीं, बल्कि विचारों को कृतिरुप देने में भी आप अग्रणी रहे। अपने ही घर पर लगभग १५ दलितों के बच्चों को पढाने तथा उनके भोजन की व्यवस्था भी आपने नि:शुल्क की थी। अपने खेत में पानी भरने तथा स्नान करने की पूरी छूट सभी दलित व बहुजन बच्चों को देकर सामाजिक समरसता व क्षुद्र मनुष्यकृत भेदभावों को समाप्त करने का कार्य श्री होलीकरजी ने किया था। अपने गाव में आर्यसमाज के प्रचार हेतु आये विद्वानों के निवास व भोजन की व्यवस्था आपके घरपर होती थी। शिक्षा के प्रसार में भी आपकी सराहनीय भूमिका रही है। पानचिंचोली गाँव में लोकमान्य विद्यालय की स्थापना कर सभी के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिये। अपने पुत्र श्री ओमप्रकाशजी एवं अन्य युवकों को संस्कृत अध्ययनार्थ गुरुकुल भी भेजा।

१०) स्व.प्रो.डॉ.चंद्रभानुजी सोनवणे

परांपरागत शिक्षापध्दति का त्यागकर वेद, उपनिषद, दर्शन, व्याकरण आदि की पढाई हेतु गुरुकुल भेजे गये होनहार युवकों में प्रो.डॉ.चंद्रभानुजी सोनवणे का नाम बडे गौरव के साथ लिया जाता है । लब्धप्रतिष्ठ **सोनवणे** परिवार के कुलदीपक श्री चंद्रभानुजी बचपन से ही संस्कारशील, धार्मिक व सामाजिक विचारों के पक्षधर रहे हैं। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार में शिक्षा-दीक्षा पूरी कर सोलापुर व लातूर के दयानन्द महाविद्यालय में हिंदी के अधिव्याख्याता पद पर आसीन हुए। संस्कृत अध्यापन में भी आप अग्रेसर रहें । मराठवाडा विश्वविद्यालय औरंगाबाद में हिंदी विभाग के प्रपाठक रुप में आपने सक्रिय योगदान दिया है । आपके निर्देशन में अनेकों छात्रों ने आपका बहुमुल्य मार्गदर्शन पाकर अध्ययन व अध्यापन का मार्ग प्रशस्त किया। भाषातज्ज्ञ के रुप में महाराष्ट्र शासन के पाठ्यक्रम मंडल पर भी सदस्य बनकर आपने काफी योगदान दिया है। साथ ही वक्ता व लेखक बनकर आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार में भी आप संलग्न रहें। आपके पदचिन्हों पर चलते हुए सुपुत्र श्री संजय सोनवणे लातूर में शैक्षिक सेवाकार्य कर रहे हैं। अपने पिता की स्मृति में स्थापित चंद्रभानू सोनवणे कनिष्ठ महाविद्यालय अल्पावधी में ही बहुत प्रगत हुआ है।

११) स्व.प्रो.डॉ.कुशलदेवजी शास्त्री

कर्मठ वैदिकधर्मी माता-पिता के संस्कारों में पलनेवाले कुशलदेवजी बचपन में ही गुरुकुल

झज्जर में प्रविष्ठ हुए । छात्रावस्था से ही आपकी लेखन कला विकसित होती रही। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में भी आपने उच्च शिक्षा पायी। गुरुकुल की शिक्षा पूर्ण कर आप नांदेड के सुभाषचंद्र बोस महाविद्यालय मे हिंदी के प्रोफेसर पद पर नियुक्त हुए। प्रभावी अध्यापन के साथ ही महर्षि दयानन्द, आर्य समाज एवं हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम इन विषयों को केंद्र बनाकर ऐतिहासिक लेखन करते रहे। महर्षि दयानन्द की जीवनी के ऐतिहासिक दस्तावेज उन्होंने खोज निकाले। अनेकों स्वतन्त्रता सेनानियों के जीवन व कार्यों पर आपने आर्यजगत् की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे । कई ग्रन्थों का लेखन भी किया। हिंदी के कई लेखों का मराठी में अनुवाद भी करवाया। वैदिक गर्जना मासिक के आप आरम्भ से ही सम्पादक रहे। महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा को कृतिशील रुप देने में वे सदैव आगे रहे । स्वयं के साथ ही अपने भाई, बहनों, कन्या व पुत्र के अन्तर्जातीय विवाह कर मनुष्यकृत जातिव्यवस्था को तिलांजली दी। श्री कुशलदेवजी बहुतही शांत, सरल, मितभाषी व सुस्वभावी थे। अपूर्व कर्मठता व तत्त्वनिष्ठा के साथ वे अंतिम क्षणों तक ऋषि दयानन्द के गवेषक के रुप में ही जीते रहे। उनकी मृत्यु भी इसी कार्य में हुई। संशोधन सेवा के कारण वे सदैव स्मरण रहेंगें।

१२) श्री गोविंदरावजी बंडेवार

बचपन से ही वैदिक विद्वानों का सान्निध्य पाकर श्री गोविंदरावजी बंडेवार महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के प्रखर अनुयायी बनें। नाण्देड जिले में एक प्रसिद्ध कपडा व्यापारी के रुप में इन्होंने अपनी अलग पहचान बना रखी है। अनेकों कष्टों को झेलते हुए आपका आरम्भिक जीवन बीता। बडे पुरुषार्थ से आपने व्यापार का कार्य शुरु किया। इतना होते हुए भी वैदिक विचारों का पालन करते रहे। परोपकार व दान में भी आपकी सदैव अग्रणी भूमिका रही है । आर्य समाज तामसा ता.हदगाव के नवनिर्माण में आपके परिवार का सर्वाधिक योगदान रहा है ।

१३) पं.सुधाकरजी शास्त्री

आर्य जगत् की महान विभूती पू.स्वामी

श्रद्धानन्दजी के ग्राम औराद(गुंजोटी) में जन्म होने से श्री सुधाकरजी पर बचपन से ही आर्य समाज के विचारों की छाप रही है । अपने काका श्री विज्ञानमुनिजी की प्रेरणा से आप वैदिक शिक्षा हेतु हिसार(हरियाणा) के दयानंद ब्राह्म उपदेशक महाविद्यालय में प्रविष्ट हुए। वहाँ पर भ्राता श्री विश्वमित्रजी

शास्त्री के सुसानिध्य में रहकर आपने वैदिक संस्कार व शिक्षाएँ ग्रहण की। स्नातक होने के पश्चात् आप महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में महोपदेशक के रुप में संलग्न हुए। लगभग १७ वर्षों तक समर्पित भाव से नगर व देहातों में जाकर आपने प्रभावशाली ढंग से पौरोहित्य कार्य किया और आज भी कर रहे है। मराठी व हिंदी में प्रभावशाली ढंग से वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार आप एक ओजस्वी वक्ता के रुप में करते हैं। पूज्य स्वामीजी के प्रभाव से आपने अपना अन्तर्जातीय विवाह किया। अन्यों को भी इसके लिए प्रेरित करते रहते हैं। सभा के विविध प्रचार उपक्रमों में आपका सर्वाधिक योगदान रहा है।

१४) पं.गणेशदेवजी आर्य

आज से २५ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में ओजस्वी वक्ता व पुरोहित के रुप में जिनकी प्रतिष्ठा व ख्याति रही, ऐसे श्री पं.गणेशदेवजी आर्य का आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार में काफी योगदान रहा है। शहापुर (ता.देगलूर) के मूलनिवासी श्री गणेशदेवजी के पिता स्व.श्री लक्ष्मणरावजी बासरे बहुत ही कर्मठ, वीतरागी व तपस्वी व्यक्तित्त्व के धनी थे। इन्हीं के कारण पुत्रपर वैदिक धर्म के संस्कार होते रहें। पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी(हरिश्चन्द्र गुरुजी)के शिष्य के रुप में भी आपकी पहचान है। इन्हीं की प्रेरणा से आपका अन्तर्जातीय विवाह हुआ। मराठी भाषा में वैदिक विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में श्री गणेशदेवजी सदैव आगे रहे। मराठी सत्यार्थ प्रकाश के निर्माण में भी आपने सहयोग दिया है। सम्प्रति आप बीदर में अपने परिवार के साथ निवास कर रहे हैं।

१५) स्व. सुशीलादेवी नि.होळीकर

स्वन्तत्रता से पूर्व लडकियों को पढने पर प्रतिबंध था। ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी माता-पिता ने सुशिलादेवी को गुरुकुल के पढाई हेतु उत्तर भारत भेजा। वहाँ पर आपने बडी लगन से संस्कृत विद्या गृहन की। साथ ही वैदिक सिद्धान्तों का भी अध्ययन किया। शिक्षा के पश्चात् आपका विवाह होली ग्राम के कर्मठ आर्ययुवक श्री निवृत्तीराव से हुआ। आदर्श पत्नी के रुप में आपने इनका साथ निभाया। परिवार पर वैदिक विचारों की संस्कार छाया से सभी को सुशोभित किया। नित्यप्रति स्वाध्याय, यज्ञ, चिंतन आदि के माध्यम से जहाँ उन्होंने अपने जीवन को यशस्वी बनाया, वहीं परिवार को भी वैदिक सिद्धांतों के साथ जोडा। अपनी कन्याओं के विवाह जातिप्रथा को तोडकर किये और मानवतावादी विचारों का प्रसार किया।

१६) स्व.(सौ.)सुलोचनादेवी वाघमारे

हु.भाई श्यामलाल व बन्सीलाल की पावन जन्मभूमि हल्लीखेड में सुलोचना देवी का जजन्म हुआ। पिता श्री माणिकराव जाधव(आर्य)कट्टर वैदिक धर्मी थे। इसी कारण सुलोचना देवी पर बाल्यावस्था से ही आर्य समाज के संस्कार रहे। माता-पिता ने आपको कन्या गुरुकुल हाथरस(उ.प्र.) में संस्कृत व वेद की शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजा। पश्चात् आपने हैदराबाद में उच्च शिक्षा प्राप्त की। प्रसिद्ध सुधारवादी युवा विचारक श्री जनार्दन वाघमारे के साथ आपका अन्तर्जातीय विवाह हुआ। आपके इस क्रान्तिकारी विवाह में पं.नरेंद्रजी, बन्सीलालजी व्यास, शेषरावजी वाघमारे, विनायकराव विद्यालंकार आदि आर्यजगत् की प्रसिद्ध हस्तियाँ सम्मिलित हुई थी। आदर्श गृहिणी के रुप में सौ.सुलोचना देवी ने श्री जनार्दनरावजी का साथ निभाया। अपने परिवार को वैदिक मानवतावादी सुसंस्कारों से अलंकृत किया। अपनी कन्याओं व पुत्र के अन्तर्जातीय विवाह कर जातिव्यवस्था के बंधनों को तोडने में आप आगे रही। श्री वाघमारेजी के सामाजिक, शैक्षिक व राजनैतिक कार्य में आप जैसी पतिपरायणा नारी का सर्वाधिक सहयोग रहा। दुर्भाग्य से दुर्धर बिमारी के कारण आपका निधन हुआ।

१७) श्रीमती मीरादेवी सोनवणे

पहले से ही परिवार में गुरुकुलीय शिक्षा के प्रति उदार दृष्टिकोण रहा । फलस्वरुप माता-पिता ने अपनी सुपुत्री मीरादेवी को वेद, संस्कृत व व्याकरण की शिक्षा हेतु गुरुकुल भेजा। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय कांगडी में आपने बडी निष्ठा के साथ प्राचीन वैदिक गुरुकुलीय परंपरा के संस्कार व शिक्षा गृहण की । विद्यालंकृता (स्नातिका) बनने के पश्चात् आपका विवाह सोनवणे परिवार के उच्च विद्याविभूषित सुपुत्र श्री चंद्रभानुजी के साथ हुआ। आपने अपने पतिदेव का साथ बहुत ही कर्मठता से साथ दिया।

१८) श्रीमती सुभद्राबाई होळीकर

परली के प्रखर आर्यसमाजी श्री दौलतरावजी गिरवलकर की कन्या होने का आपको सौभाग्य प्राप्त है। बचपन में ही आपको वैदिक शिक्षा प्राप्त हेतु गुरुकुल महाविद्यालय कांगडी, हरिद्वार भेजा गया। आपने वहाँ पर संस्कृत शिक्षा प्राप्त कर वैदिक सिद्धान्तों को ग्रहण करती रही। शिक्षा के पश्चात् आपका विवाह तत्त्वनिष्ठ विचारों के अनुगामी युवक श्री दिगंबरराव होलीकर से हुआ। पति के प्रखर विचारों को ग्रहण कर उन्होंने अपने गृहाश्रम को सफल बनाया।

श्री होलीकरजी सिद्धान्तों के बहुत ही पक्के और सामाजिक विचारों को दृढता के साथ निभानेवाले व्यक्ति थे। तब ऐसे व्यक्तित्व की सहधर्मचारिणी बनकर आपने पत्नीव्रत को आजीवन निभाया। उनके प्रत्येक निर्णय में सुभद्रादेवी सीता के समान एक साथ कदम बढाते रही। आर्य समाज के विचारों का पालन बहुत ही निष्ठा के साथ किया। आपका समग्र जीवन संघर्षमय रहा है। अपनी कन्याओं को सुसंस्कारित कर उनके अन्तर्जातीय विवाह कराने में माता सुभद्रादेवी का सर्वाधिक योगदान माना जाता है।

१९) श्रीमती रुक्मिणीदेवी वा.होलीकर

पितृकुल के कट्टर पौराणिक विचारों में पली रुक्मिणीदेवी विवाह के पश्चात् पतिकुल के प्रगतिशील वैदिक विचारों में सहजता से घूलमिल गयी। होली ग्राम में आर्य समाज के कारण परिवर्तनशील विचारों से क्रांतिकारी बदलाव आया था। ऐसे में वासुदेवराव जैसे प्रखर सुधारवादी पतिदेव का साथ रुक्मिणीदेवी ने बडी श्रद्धा व निष्ठा के साथ निभाया। गांव में वेद प्रचारार्थ पधारे आर्य विद्वानों के भोजन की व्यवस्था आप अपने घर पर सदैव करती थी। इसके साथ ही कई अध्यापकों व दलित छात्रों के भोजन का प्रबंध भी आपने बडी उदारता के साथ किया। परंपरागत पौराणिक विचारों का त्याग कर समतावादी तत्त्वों को ग्रहण करने में आप आगे रही। सही अर्थों में पतिपरायणा आर्य नारी होने का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ। अपने पुत्रों व परिवार के सदस्यों को सुशिक्षित बनाने व उन्हें सामाजिक व राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति जागरुक रखने का कार्य भी इस माता ने किया है। परोपकार, दान, अतिथि सेवा आदि कार्यों में संलग्न श्रीमती रुक्मिणीदेवी आज आयु के ९३ वे वर्ष में भी उतने ही उत्साह के साथ आगे बढ रही है।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में इन सभी आर्यविचारों के प्रखर अनुगामी नर-नारियों का गौरव समारोह दि.१५.०३.२०१७ को गांधी चौक, लातूर में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता तपस्वी आर्य सन्यासी पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी ने की। स्वामीजी के करकमलों से उपरोक्त सभी आर्यसेवियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर पं.मोहितजी शास्त्री, पं.राजवीर शास्त्री तथा डॉ.श्री वाघमारे प्रमुख अतिथि के रुप में उपस्थित रहें। कई दिवंगत गौरवमूर्तियों की स्मृतियों में उनके परिवार व आप्तजनों ने गौरवराशियाँ सभा को प्रदान की, जिनके ब्याज से महाराष्ट्र में वेदप्रचार होता रहेगा। **(समारोह का विस्तृत वृत्तांत मराठी विभाग में पढें।)**

शोकसमाचार

कर्मठ आर्य समाजी केरबा सालुंके नहीं रहे।

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम काल में वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा हेतु जान हथेली पर लेकर लडनेवाले शिवनखेड(बु.) ता.चाकूर जि.लातूर के वयोवृद्ध कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता श्री केरबा बापूरावजी सालुंके का ९० साल की दीर्घायु में दि.१५ फरवरी २०१७ को दु:खद निधन हुआ।

वे अपने पश्चात् ३ सुपुत्र, २ कन्याएं, बहुएं, दामाद, पौत्र-पौत्रियों एवं दौहित्र-दौहित्रियों से भरा परिवार छोडकर परलोक की ओर चल बसे ।

श्री केरबाजी अशिक्षित होते हुए भी सत्य सनातन वैदिक धर्म के पक्के अनुयायी थे । आर्य समाज के सेवाकार्यों मे वे सदैव संलग्न रहें । सत्संग, पर्व, सम्मेलन एवं वेदप्रचार आदि कार्यों में आप निरन्तर सम्मिलित होते थे । शिवनखेड यह गांव उस समय हैदराबाद संग्राम की परिसर की गतिविधियों का केन्द्र माना जाता था। निजाम शासक की यहां पर जागीर थी। आये दिन यहां पर ग्रामवासियों पर अन्याय-अत्याचार होते रहते थे। यहां की आर्य समाज उस समय बहुत ही सक्रिय होने से यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग आदि उपक्रमों के माध्यम से यहां पर स्वराज्य व स्वतन्त्रता पर आर्य विद्वानों का प्रबोधन होता था। लेकिन निजाम के हस्तकों यह मान्य नहीं था । यज्ञ करने व सत्यार्थ प्रकाश पढने पर पाबन्दी लगायी गयी । आर्यजन चोरी छुपे **÷सत्यार्थप्रकाश'** पढते थे। उस समय इस ग्रंथ को सांकेतिक भाषा में क्रांतिकारी **÷बम'** कहा जाता था । ऐसे समय में क्षात्रवृत्ति के नीडर आर्यवीर श्री केरबाजी सालुंके सामने आये और उन्होंने अपने खेत में चारे की गंजी में यह ग्रन्थ छुपाकर रखा। जब जरुरत पडे, तब उसे निकालकर आर्यजन उसका स्वाध्याय करते थे । ऐसे धैर्यशाली वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता के चले जाने से स्थानीय आर्यों का ऊर्जा केंद्र लुप्त सा हो गया है।

स्व.श्री सालुंके के पार्थिव पर दोहपर ४ बजे पूर्ण वैदिक रीति से अन्ति संस्कार किये गए । सर्वश्री पं.अशोक कातपुरे, भागवत आरदवाड, विजयपाल कुल्ले आदि आर्यजनों ने यह दाहसंस्कार सम्पन्न कराया।

दिवंगत आत्मा को प्रान्तीय सभा व सभी आर्य समाजों की ओर से भावपूर्ण श्रद्धान्जलि व विनम्र अभिवादन... ×

।।ओ३म्।।

माझ्या मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश — वाणी व मन शुद्ध करावे

यच्छेद् वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेद् ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि।। (कठोपनिषद-३/१३)

बुद्धिमान माणसाने(संन्यासाने) वाणीला व मनाला अधर्मापासून परावृत्त करावे; व त्यांना ज्ञान व आत्मा यांच्या ठिकाणी लावावे. मग त्या ज्ञानाला व स्वात्म्याला परमात्म्यामध्ये तल्लीन करावे. या मार्गाने प्राप्त होणाऱ्या विज्ञानाला शांतस्वरुप आत्म्यामध्ये स्थिर करावे.

दयानंद वाणी — आर्य समाज-सुख समृद्धीचे माहेरघर×

.... म्हणून या देशाची उन्नती व्हावी, असे तुम्हाला वाटत असेल तर तुम्ही **÷आर्य समाजा'**शी सहकार्य करुन त्याच्या उद्दिष्टानुसार आचरण करण्यास सुरुवात करा. नाही तर तुम्ही कांहीही करु शकणार नाहीत. कारण तुम्ही व आम्ही मिळून देशोद्धाराचे काम केले पाहिजे. ज्या देशातील पदार्थांनी तुमची-आमची शरीरे बनली आहेत, आज त्यांचे पालनपोषण होत आहे व यांपुढे होणार आहे, त्यांची आपण सर्वजन मिळून, तन-मन-धनाने व प्रेमाने उन्नती करु. आर्यावर्त्ताची उन्नती करण्यास **÷आर्य समाज'** जसा समर्थ आहे, तसा दुसरा कोणताही समाज, संस्था अथवा संघटना असू शकत नाही. या समाजाला तुम्ही यथोचित साह्य कराल, तर ती फार चांगली गोष्ट होईल. कारण समाजाला भाग्यशाली बनविणे, हे समुदायाचे काम असते. ते एकट्या-दुकट्याचे काम नसते.

(सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)

अशाने देश चालणार नाही ×

- डॉ.ब्रह्ममुनी(सभाप्रधान)

महाभारतापूर्वी साधारणपणे एक हजार वर्षाच्या अगोदरचा इतिहास व साहित्य पाहिले, तर आपणांस असे लक्षात येईल की, त्यावेळी आजच्या प्रमाणे भांडणे होत नव्हती. केवळ सत्य-असत्य आणि धर्म-अधर्म यासंबंधी विचार होता. ऋषिगण राजाची निवड करीत असत. जो विद्वान, सत्यवादी, धार्मिक, जितेंद्रिय आहे. जो पक्षपाती नाही, सर्वांचे रक्षण करु शकतो. सर्वांना न्याय देऊ शकतो. अशांनाच ऋषी लोक राजा बनवित असत. त्यावेळी धर्म एकच होता. तो म्हणजे **÷मानव धर्म'×** ईश्वर एकच आणि जात पण एकच म्हणजे मनुष्य जात होती. गुण, कर्म व स्वभावाप्रमाणे चांगले व वाईट, सदाचारी व दुराचारी, धार्मिक व अधार्मिक असे भेद होते. दुष्टांना दंड देण्याची न्यायव्यवस्था होती. धर्म हा जीवनाचा आधार होता. मोक्ष हेच जीवनाचे ध्येय होते. त्यासाठी धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष हे चार पुरुषार्थ होते. राजाला सत्य व धर्माप्रमाणे राज्य करणे आवश्यक होते. सर्वांचे सुख, सर्वांचे कल्याण, सर्वांना समान न्याय होता. दुष्टांना दंड व सज्जनांना शाबासकी होती.

लोकांना धार्मिक, विद्वान, सत्यवादी, चरित्रवान, पुरुषार्थी, ब्रह्मचारी, जितेंद्रिय बनविण्याची जबाबदारी विद्वान, आचार्य, ऋषी व मुनी यांची होती. ब्राह्मणत्व असलेल्या लोकांचे हे काम होते. वेदाध्ययन हा आधार होता. समाजव्यवस्थेत गुण, कर्म व स्वभावाप्रमाणे चार वर्ण होते. ते वर्ण जन्माने नसून योग्यता व प्रवृत्तीप्रमाणे स्वीकारले जात होते.

अशा आदर्श व्यवस्थेमुळे त्या काळात चक्रवर्ती राजे झाले. साऱ्या जगावर या सिद्धांतांनी व संस्कृतीने राज्य केले. महाभारतानंतर सत्य ज्ञानाच्या जागी असत्य आले. वेदांच्या नावावर ÷वेद व निसर्ग' यांविरुद्ध आचरण झाले. परिणामी अज्ञान व अंधविश्वास वाढत गेले. अंध रुढी परंपरा वाढत गेल्या. धर्माचे मूळ स्वरुप बदलले गेले व लोक अधर्मालाच ÷धर्म' संबोधू लागले. कर्मकांडाचे प्रस्थ वाढले. ईश्वराच्या नावावर व्यक्तिपूजा व जडपूजा सुरु झाली. नकली ईश्वर निर्माण झाले व त्याची नकली व्यवस्था लोकांसमोर आली. त्यामुळे लोभ व भीतीपोटी ईश्वर धर्म आला. पाप-पुण्य याची कल्पना बदलली. कर्मफल सिद्धांत बदलला. पुण्य कमावून देणारे एजंट बनले. पाप नष्ट करणारे एजंट झाले. वर्णव्यवस्था बिघडून ती जन्मगत झाली. योग्यता, आवड व क्षमता बाजूला

राहिली. जन्मानुसार वर्ण झाले. वेदाध्ययनाचा अधिकार ब्राह्मणेतर लोकांना व महिलांना नाकारण्यात आला. मग यांच्यासाठी पोथीपुराण तयार झाले. पुढे चालून धंद्यावरुन जाती निर्माण झाल्या. याच जातींना पुढे जन्मानुसार मानू लागले. उच्च-नीच अशा भेदभावांची कल्पना प्रबळ झाली. उच्चवर्णीय लोक इतर वर्णाच्या व जातीच्या लोकांना नीच मानू लागले. स्पृश्य-अस्पृश्याची भावना वाढीला लागली. समाजात अन्याय वाढू लागले. मूळ वैदिक संस्कृती बाजूलाच राहिली व लोक या बिघडलेल्या स्वरुपालाच वैदिक संस्कृती मानू लागले. तत्कालीन विचारवंतांनी वेळोवेळी बाबा लोकांच्या या चुकांवर बोट ठेवून दोष दाखविण्याचा प्रयत्न केला. पण प्रश्न विचारण्यास, तर्क करण्यास धर्मगुरुंनी विरोध केला. प्रश्न विचारणाऱ्यास दंड, मृत्युदंड, वाळीत टाकणे, नास्तिक म्हणून संबोधणे सुरु झाले. चुकीचे ओझे घेऊन जाणारा, वेदविरुद्ध चालणारा, निसर्गाविरुद्ध आचरण करणारा हा ÷आस्तिक' व त्याला विरोध करणारा हा ÷नास्तिक' अशी कल्पना रुढ झाली. मतांमतांत संघर्ष सुरु झाले. त्यातूनच अनेक मतप्रवाह निर्माण झाले व त्याचीच परिणती म्हणजे आजचे अनेक मत-पंथ होत. आजच्या अनेक पंथांचा उगम हा त्या चुकांच्या विरोधात प्रतिक्रियात्मक आहे. परंतू चुका करणाऱ्या प्रस्थापितांनी कधीच आपल्या चुका मान्य केल्या नाहीत. उलट त्या वेदांच्या व शास्त्रांच्या माथी मारल्या. त्यामुळे वेद, शास्त्र, ईश्वर हे शब्द बदनाम झाले व चुका करणारे स्वत:ला वैदिक म्हणवून घेऊ लागले. चुका दाखविणाऱ्यांना वेदविरोधी संबोधले गेले. आता या दोन्हींमध्ये पुन्हा स्पर्धा, भांडण, ईर्ष्या-द्वेष सुरु झाले. चार्वाक, बौद्ध, जैन हे नवीन मत वेदविरोधी समजले जाऊ लागले. या मतांनाच ते ÷धर्म' म्हणू लागले. यांच्यात एकमेकांवर राज्य करण्याची प्रवृत्ती बळावली. राजांच्या साहाय्याने मताचा प्रचार-प्रसार करायला सुरुवात झाली. त्यामुळे आपल्याच भारतात अनेक लढाया झाल्या. रक्तपात झाले. एकमेकांना धोका देणे, विश्वासघात करणे, फितूर होणे आदी अनेक प्रकार वाढले. या सर्वांची भांडणे चालू असतांना परदेशात ईसाई, इस्लाम हे पंथ निर्माण झाले. चुका दाखवत-दाखवत स्वत:ही चुकीच्याच चक्करमध्ये सर्व मत-पंथ पडत गेले. अनेक चुका व चालीरीती ह्या मागच्या पुढे घेण्यात आल्या. आपली संख्या वाढविण्यासाठी धर्मगुरुंनी सोपे मार्ग व लालच दाखविण्याचा प्रयत्न केला.

मूर्तिपूजेला विरोध म्हणून इस्लामचा उदय झाला. पण तो फारच जहाल ठरला व

प्रतिक्रिया म्हणून त्यांनी मूर्तिभंजन केले. प्रत्येक मत-पंथवाल्यांनी आज मोठ्या प्रमाणात साहित्य निर्माण केले आहे. त्यांचे त्यांचे धर्मगुरु आहेत. सर्वांमध्ये चुका वाढतच गेल्या. निसर्गाच्या विरुद्धच सर्व जाती राहिल्या. पण प्रत्येकांमध्ये आज ÷आमचेच बरोबर आहे व आमचे राज्य असले पाहिजे', ही धारणा बळावली आहे.

आज भारतात सर्वच मत-पंथ आहेत. धर्मनिरपेक्षता तत्त्वावर लोकशाही आहे. मतांवर नेता निवडला जातो. त्यामुळे प्रत्येक मत(धर्म)आपली संख्या वाढविण्याचा प्रयत्न करीत आहे. भारत देश मोठा आहे. सर्व मत जर आपापले राज्य करु म्हणाले, तर हे कदापी शक्य नाही. परदेशात देखील वंशवादातून किती तरी लोकांचा बळी गेला आहे. अनेक लढाया झाल्या. राज्य हे सर्वांसाठी असते.मागचा सर्व इतिहास बघूनच सेक्यूलरचा विचार पुढे आला होता. यात मानवमात्र व त्यांच्या जीवनाशी संबंधित सुख, शांती, सुरक्षा, धंदा वगैरेसाठी सर्वांना समान हक्क दिले होते.

भारताची घटना निर्माण करतांना सुद्धा तोच विचार ठेवून सेक्यूलर(धर्मनिरपेक्ष) तत्व स्वीकारले आहे. म्हणजे तुमचे मत-पंथ, धर्मग्रंथ, विश्वास हा तुमच्या घरांपर्यंत असावा. समाज व देश यांचा विचार करीत असतांना जीवनावश्यक गोष्टी न्याय, शिक्षण, हक्क, कर्तव्य हे मानव म्हणून, नागरिक म्हणून समान असावे, ही अपेक्षा आहे. हीच अपेक्षा सर्वांनी, विशेषत: सर्वांत अगोदर हिंदूंनी लक्षात घेऊन म.स्वामी दयानंद सरस्वतींचे वेद-विचार जर मान्य केले, तर सर्व समस्या, तेढ, भांडणे इत्यादी सर्व नाहीसे होतील.

वेदात जे आहे, ते निसर्गात पूर्वी होते व आजही आहे आणि पुढेही राहणार आहे. निसर्ग हा प्रत्यक्ष सत्य आहे. निसर्ग कधी खोटे बोलत नाही. कधीही पक्षपात करीत नाही. त्याने सर्वांना सुखी करण्याची साधने दिली आहेत.सुरक्षा पण दिली आहे. या सर्व भांडणाचे मूळ कारण म्हणजे मतांमतांचा गलबला होय. अज्ञान, असत्य, अंध:विश्वास, अंधश्रद्धा यांवर आधारित भांडणे आहेत. ईश्वराच्या, धर्माच्या, जातीच्या, धर्मग्रंथांच्या व अध्यात्माच्या नावावर भांडणे आहेत. जीवनाच्या ध्येयावर, जन्ममृत्यू व पुनर्जन्मावर, स्त्री-पुरुषांच्या बाबतीत, भोगवाद-त्यागवादावर, ईश्वर,जीव, प्रकृतीच्या नावावर, स्वर्ग-नरकाच्या नावावर देखील संघर्ष आहे. मोक्ष,सृष्टी उत्पत्ती इत्यादी बाबींसह अनेक प्रकारची भांडणे उद्‌भवतात. ती सोडविण्यासाठी महर्षी दयानंदांनी वेदांचा अर्थ ईश्वराच्या उद्देश्याला अनुसरुन व सृष्टीक्रमाला धरुन सांगितला. वेदज्ञानाद्वारे

संपूर्ण विश्वाला एका विचार छत्राखाली आणून सर्वांना सुख-शांतता, आनंद, सुरक्षा मिळवून देण्याचा त्यांचा उद्देश होता. तो शाश्वत सत्यावर आधारित आहे. त्याला कोणीच बदलू शकत नाही.

निसर्गात आजही एक ईश्वर प्रत्यक्ष आहे. त्याचे गुण, कर्म, स्वभाव हे निसर्गात दिसतात. जो सृष्टीची उत्पत्ती, संगोपन व संहार करतो, सर्वांना नियमांत चालवितो, सूर्यमंडल निर्माण करतो व एका विशिष्ट गतीत ठेवतो. असा तो ईश्वर एक आहे. हे सर्व आपण प्रत्यक्ष निसर्गात पाहतो, आपल्या आत्म्यात त्याचा अनुभव घेतो. कारण आपणही निसर्गातील एक भाग आहोत.

सृष्टीतील प्रत्येक पदार्थ आपापले गुणधर्म सांभाळतो –

सूर्य, चंद्र, हवा, पाणी, अग्नी इ. जड पदार्थ हे सर्व आपापले गुणधर्म सांभाळतात. तसेच मनुष्य जो की सजीव आहे. त्याचा आत्मा हा मुख्य आहे. बाकी शरीर हे पंचभूतापासून बनले आहे. आत्म्यामुळे मानव जीवन जगतो. आत्म्यासाठीच मानव जीवन आहे. आत्मा हा सृष्टीतील पदार्थ आहे. त्याची इच्छा ही शाश्वत व सार्वभौम आहे. सुख,शांती, आनंद, सुरक्षा, ईश्वर प्राप्ती, परोपकार, त्याग व आत्म्याला ज्यात प्रसन्नता आहे,त्यालाच धर्म म्हणतात. म्हणून मानवाचा धर्म एकच होतो. जो अविरोध आहे, तो मानवधर्म होय. निसर्गातील सूर्य, चंद्र, वनस्पती, भूमी, हवा, पाणी, प्राणी, हे सर्व कधीच पंथवाचक वा जातिवाचक भेदभाव करीत नाहीत.

प्रत्यक्षात आजही मूल जन्माला येते, तेंव्हा त्यावर कोठेही निसर्गतः पंथांचा, मतांचा वा जन्मगत जातींचा शिक्का नाही, हे कटू सत्य आहे. म्हणून मानव ही एकच जात आहे. स्त्री-पुरुष हा लिंगभेद आहे व चांगले-वाईट हा गुणभेद आहे. ज्ञानाची उत्पत्ती कोणीही मानव करु शकत नाही. म्हणून सृष्टी उत्पत्तीच्या वेळी सृष्टीनिर्मात्याने या सृष्टीची ओळख व त्याचा वापर आत्मकल्याणासाठी कसा करावा? याचे ज्ञान जे की शाश्वत आहे व सृष्टीत देखील प्रत्यक्ष आहे. ते ज्ञान शब्द व मंत्र रुपाने वेदांद्वारे दिले गेले. म्हणून वेद हेच सर्वात जुने व शाश्वत सृष्टीक्रम सांगणारे मानवाचे धर्मग्रंथ आहेत.

हे वेद ज्ञान पूर्ण सत्य व शाश्वत आहे. सार्वभौम आहे. पक्षपातरहित सर्वांच्या कल्याणासाठी आहे. हे सर्व कांही आपणांस महर्षी दयांनदांचे साहित्य वाचूनच कळेल. याला स्वीकारल्याशिवाय देशाचा, राज्याचा व विश्वाचा गाडा चालणारच नाही. म्हणून वेद सांगतात-÷**नान्यः प्रन्था विद्यतेऽयनाय।**' अर्थात् वैदिक सत्य ज्ञानाचे आचरण केल्याशिवाय अन्य दुसरा कोणताही मार्ग नाही. हा सर्वांनी स्वीकारलाच पाहिजे.

– आर्य समाज, परळी-वै. जि.बीड

आर्य समाज कसा वाढेल ?

– माधव के. देशपांडे (सभामंत्री)

÷आर्य समाज' हा कांही नवीन शब्द नाही. याची स्थापना होऊन आज १४३ वर्षे झाली आहेत. आज बहुतांश भारतवासी स्वत:स ÷हिंदू' म्हणवून घेतात, पण प्राचीन काळ असो की, मध्यकाल असो कोणत्याही संस्कृत साहित्यामध्ये हा ÷हिन्दू' शब्द आढळून येत नाही. या देशाचे नाव **÷आर्यावर्त्त**' असल्याचे आढळून येते. म्हणूनच येथे राहणाऱ्या लोकांचे ÷आर्य' हे नाव होते. ÷आर्य' यांचा अर्थ श्रेष्ठ, सुशिक्षित, सुसंस्कृत असा होतो. म्हणून आर्य समाजाचा अर्थ श्रेष्ठ लोकांचा समुदाय, समूह किंवा समाज असा होतो. आर्य समाज म्हणजे आर्यांची संघटना होय. श्रेष्ठ पुरुषांची व सुसंस्कृत लोकांची संघटना आहे. हा झाला आर्य समाजाचा शब्दश: अर्थ× आता प्रश्न असा पडतो की काय आमचे आचरण या अर्थाशी अनुकूल आहे ? काय आमचा व्यवहार श्रेष्ठ पुरुषांसमान आहे ? निश्चितपणे असावयास पाहिजे× आज इतके उच्च आदर्श बाळगून या जगातील अन्य कोणतीही संघटना स्वत:स प्रस्तुत करत नाही. दार्शनिक दृष्टी बाळगणारी ही संस्था आहे आणि ÷आम्ही अशा उच्च आदर्शवादी संघटनेचे अनुयायी आहोत', म्हणून आम्ही ऋषी दयानंदांचे ऋणी आहोत. त्यांचे अनुयायी आम्ही तेंव्हाच होऊ शकतो, जेंव्हा आम्ही आपले आचरण या संघटनेच्या नियमांनुसार काटेकोरपणे करीत राहू तर...×

म.दयानंद सरस्वतींनी **÷आर्य**' बनण्यासाठी कांही नियम सांगितले आहेत. पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय म्हणतात, ÷प्रत्येक संस्था, सभा अथवा समाजासाठी दोन प्रकारचे नियम असतात – १) मौलिक किंवा मुख्य नियम व २) गौण नियम×' म.दयानंद सरस्वती हे आर्य समाजाचे संस्थापक व प्रवर्तक होते. त्यांनी आम्हांस वैदिक सिद्धान्त समजून घेण्यासाठी तीन प्रमुख साधने दिली आहेत. १)आर्य समाजाचे १० नियम, २) सत्यार्थ प्रकाश, ३) स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश आणि अन्य ग्रंथ× यांपैकी आम्हांसाठी मुख्य काय आहे? हे समजणे आवश्यक आहे. आर्य समाजाचे मूळ आहेत त्यांचे नियम × आर्य समाज या संस्थेचा सदस्य बनण्यासाठी ऋषींनी या नियमांचे पालन करणे अनिवार्य आहे, असे सांगितले. महत्वाची गोष्ट ही की, या नियमांमुळे आर्य समाजाविषयक विशेष ज्ञान प्राप्त होते. या नियमांचे सुद्धा तीन विभाग आहेत. त्यापैकी पहिल्या भागात दोन नियम मोडतात. ज्यांमध्ये ईश्वराचे स्वरुप प्रतिपादन केले आहे. अर्थात् आर्य समाज एक

आस्तिक, ईश्वरास मानणारी संस्था आहे. या जगात आस्तिक (ईश्वरवादी) संस्था शेकडोंच्या संख्येने आहेत. परंतु या संस्थांमध्ये व आर्य समाजामध्ये खूपच अंतर आहे. या ठिकाणी ईश्वराच्या गुणांचे विस्तृत वर्णन हाच फरक दर्शविण्यासाठी केले आहे. आमच्या मान्यतेनुसार हेच ईश्वरीय गुण आम्हांस अन्य अनेक आस्तिकवादी संघटनांपासून वेगळे करतात. आर्य बनण्यासाठी आम्हांस या ईश्वरीय गुणांना योग्य प्रकारे समजून घेणे व त्यांना धारण करणे सुद्धा आवश्यक आहे.

वेदांना मानणारे अन्य लोक व संस्था सुद्धा शेकडो आहेत. शेकडोंच्या वर संघटना आहेत. परंतु आर्य समाजाची व पर्यायाने महर्षी दयानंदांची वेदमान्यता भिन्न आहे. वेद आमच्या दैनिक जीवनातील व आचरणातील अभिन्न अंग आहेत. केवळ पूजा करण्यासाठीच नसून ते तिन्ही काळातील सत्य ज्ञान आहेत. वेदप्रचारासाठी आपण काय करीत आहोत ? यापेक्षा काय करु शकतो? यावर गांभीर्याने विचार करणे आवश्यक आहे. आर्य समाजाच्या विशाल तत्त्वज्ञानाचा आधार तर वेदच आहेत.

तिसऱ्या विभागात उर्वरित ७ नियम येतात. अन्य लोक व संघटना ईश्वरवादी आहेत. वेदाला मानणाऱ्या सुद्धा आहेत, परंतु त्यांचा संबंध मनुष्यमात्राच्या कल्याणासाठी नाही. म्हणून ते आर्य समाजाच्या प्रमुख उद्देशांना समजू शकत नाहीत. आम्ही स्वत:ला आर्य समाजाचे अनुयायी म्हणवून घेतो. तर मग मनुष्याच्या कल्याणासाठी एखादे तरी कार्य करीत आहोत काय ? यावर गांभीर्याने विचार करावयास हवा. वेद हे ईश्वरीय ज्ञान आहेत. समस्त मानवाच्या कल्याणासाठी दिलेली ईश्वरीय देणगी आहे. म्हणून वेदप्रचार व प्रसार करणे हे एक आमचे आद्य कर्तव्य ठरते. वेदप्रचार कार्य श्रावणी पर्वाव्यतिरिक्त सुद्धा करता येते.

काय आम्ही आर्य समाजाच्या सिद्धांतांवर अटळपणे उभे आहोत? कांही प्रसंगी, कांही वेळा लवचीक भूमिका का म्हणून धारण करतो? विचार करा× आत्मपरीक्षण करा× आमचे मार्गदर्शक, आदर्श उपदेशक, गुरुसमान विद्वान् कसे होते ? विचार करा × काय महर्षी दयानंदांनी, सत्यासाठी असत्याशी कधी तडजोड केली होती काय ? मग सिद्धांतासाठी आम्ही मध्यम मार्गाचा का म्हणून अवलंब करीत आहोत? तडजोड करण्यासाठी म.दयानंदांना किती तरी प्रलोभने देण्यात आली ? समस्त भारत त्यांचा अनुयायी बनण्यासाठी तयार होता. यासाठी फक्त अट केवळ एकच की त्यांनी मूर्तिपूजेचे खंडन करणे सोडावे. अशा प्रकारची सर्व प्रलोभने त्यांनी नाकारली. आमची मान त्यांच्या तपोबलापुढे श्रद्धेने

झुकते. दुर्दैवाने शेवटी त्यांना आपला जीव पण गमवावा लागला.

लोक आम्हांस अडेलतट्टू म्हणतात. म्हणू देत × काय अनियमितता स्वीकारणे म्हणजे उदारता आहे? कोणत्याही संघटनेस सशक्त बनण्यासाठी निश्चित सिद्धांतांची आवश्यकता असणे गरजेचे असते. हिंदू संघटनांमध्ये हाच एक प्रमुख दोष आहे की ÷त्यांच्या सिद्धांतांमध्ये नेमकी एकजुट नाही.' जो कोणी आला, त्याने आपलीच मनमानी केली. परिणाम आज त्यांचे अनेक तुकडे झाले आहेत. संघटन बिघडले. एकमेकांचे हेवेदावे व द्वेष भावना वाढीस लागली. म्हणून जोपर्यंत आर्यसमाज ऋषी-महर्षींच्या विचारांनुसार व नियमांनुसार चालत राहील, तोपर्यंत त्यांची उन्नती निश्चित आहे. क्षणिक प्रलोभनाला, जर आम्ही बळी पडत गेलो, तर जशा अनेक संघटना नाहीशा झाल्या, तसे आमचेही व्हावयास वेळ लागणार नाही.

या जगात ईश्वर एक आहे, हे मानणारा ही बरोबर व अनेक ईश्वराची आराधना करणारा ही बरोबर× साकार ईश्वर मानणारा ही बरोबर व निराकार ईश्वराची भक्ती करणारा ही बरोबर× मूर्तिपूजक सुद्धा चांगला व मूर्तिपूजेवर टिका करणाराही चांगला× गाईचा बळी देणाराही उत्तम व पुण्य प्राप्तीसाठी गाईची पूजा करणाराही उत्तम× ईश्वराला अजन्मा मानणाराही भला व त्याला अवतारी मानणाराही भलाच× याचा परिणाम असा झाला की, धर्म आणि जाती (मनुष्य जाती) च्या रक्षणासाठी इच्छा आणि साहस या दोन्हीही बाबी नाहीशा झाल्या. निर्बलता, अनुचित शिक्षण पद्धती, बल प्राप्त न करणे, आळस, करंटेपणा, धर्मपरिवर्तन हे ज्वलंत प्रश्न आज आमच्यापुढे उभे आहेत. आमचे बुद्धिवादी आज असे म्हणत आहेत की, कोणाला आळू खाणे आवडत असेल व कोणाला मूळा खाणे आवडत असेल तर काय बिघडले ? आपणांपुढील समस्या काय आहेत? हे सर्व आपण जाणतच आहोत. आपसातील फूट, भेदभाव, द्वेषभावना हे दोष कोणत्याही संघटनेला मारकच आहेत× मग ती संघटना आर्य समाज असो की अन्य कोणती ? ही भयंकर आव्हाने आज आमच्या दारावर उभी आहेत. अनेक ठिकाणी वरील दोषांनी प्रवेश पण केलेला दिसून येतो.

संघटना मजबूत करा. आपली संघटन शक्ती वाढवा. संघटनेत काय शक्ती असते? हे जाणण्यासाठी हैदराबाद मुक्ती संग्राम आठवा× आपसातील वैरभाव समाप्त करा. शिक्षण व विद्याप्राप्तीसाठी परिश्रम करा. वेदविद्या ही आत्मकल्याणाची विद्या आहे. आम्हांस ती मोठ्या कष्टाने मिळाली आहे. त्यासाठी पुरुषार्थ करु या व सिद्धांत दृढ करण्यासाठी प्रयत्न करु या ×

आपला स्वाध्याय वाढविला पाहिजे.

आपणांस अनेक ग्रंथ वाचण्याची आवश्यकता नाही. ÷सत्यार्थ प्रकाश' या ग्रंथाच्या रुपाने जवळपास ३००० ग्रंथाचे सार म.दयानंदांनी आम्हांस प्रदान केले आहे. सत्यार्थप्रकाश ग्रंथामुळे तर्कबुद्धी वाढेल व व्यक्ती अशा शब्दजाळ्यात अडकणार नाही.

÷नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय।'

दहावा नियम हा मानवमात्रांना समग्र उन्नती करण्यासाठीची चावीच आहे. संघटनेशिवाय कोणत्याही समाजाची अथवा संस्थेची निर्मिती होऊ शकत नाही. सर्वजण एकत्ररित्या किंवा एका मनाने केंव्हा कार्य करु शकतील ? आर्य समाजाच्या दहाव्या नियमात म.दयानंदांनी याचा मूलमंत्रच दिला आहे. जेंव्हा भिन्न-भिन्न सदस्य आपापली स्वतंत्र विचारसरणी सोडून परस्परतंत्रता (Inter dependance) चा विचार करतील, तेंव्हा सर्वांचा विकास होईल× व्यक्ती समष्टीसाठी आहे व समष्टी व्यक्तीसाठी आहे. व्यक्तीचे व्यक्तित्व ही नष्ट होऊ नये व त्याद्वारे समष्टीची उन्नती पण झाली पाहिजे. जेथे हा समन्वय साधला जातो, तिथे संघटना सशक्त होते. यासाठी प्रत्येक सदस्याने शक्य असल्यास तन-मन-धनाने योगदान द्यावे.कांहीच नाही तर आपला अमूल्य वेळ तरी आर्य समाजाच्या कार्यास देणे गरजेचे आहे. आर्य समाजासाठी दररोज कमीत कमी एक तास देण्याची तयारी ठेवावी. प्रत्येक काम करण्याची आमची तयारी असावी. आर्य समाजाच्या १४७ व्या स्थापना दिनानिमित्त्य ईश्वरीय मूल्यांवर आधारित या संस्थेची संवर्धन व संरक्षण करण्यासाठी आम्ही एकजुटीने तत्पर राहण्याचा संकल्प करु या×

रो हाऊस नं.३, साऊथ अव्हेन्यू,
पिंपळे सौदागर, पुणे-२७
- मो.९८२२२९५५४५

सभेचे चेकबुक हरवले आहे

लातूर येथील आर्य समाज, गांधी चौक मध्ये दि.१५ मार्च २०१७ रोजी दुपारी आयोजित ÷ज्येष्ठ आर्य साहित्यिक व विद्वानांच्या गौरव समारंभाच्या वेळी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे भारतीय स्टेट बँकेचे चेकबुक गहाळ झाले (हरवले) आहे. ÷चेक क्र.१७९३०१ ते १७९३५०' अशा क्रमसंख्येतील चेकबुक जर एखाद्या आर्य कार्यकर्त्यास सापडले असेल किंवा चुकून त्यांचेकडे आले असेल, तर त्यांनी त्वरित सभेचे व्यवस्थापक श्री रंगनाथ तिवार यांचेशी भ्रमणध्वनी क्र. ९४२३४७२७९२ वर संपर्क करुन कळवावे व नंतर पाठवावे, ही नम्र विनंती.

- सभामंत्री

कार्यक्रम विस्तृत वृत्तांत

प्रांतीय सभेतर्फे १९ ज्येष्ठ आर्य विभूतींचा गौरव संपन्न

÷मातृसंस्थेकडून झालेला आयुष्यातील सर्वात मोठा सत्कार'

– सत्कारमूर्ती डॉ.जे.एम.वाघमारे यांचे हृदयोद्‌गार

÷महर्षी दयानंद सरस्वती हे महान समाजसुधारक व वेदप्रणित नव्या युगाचे शिल्पकार होते. आर्य समाजाच्या माध्यमाने त्यांनी साऱ्या जगाला सुखाचा मूलमंत्र दिला. विद्यार्थी दशेत याच आर्य समाज संस्थेने जगण्याची नवी दिशा व आत्मबळ दिले म्हणूनच आर्य समाज ही माझी संस्कारशाळा आहे. या मातृसंस्थेकडून झालेला सत्कार माझ्या आयुष्यातील सर्वात मोठा गौरव असून माझ्यासाठी हा सर्वोच्च आनंदाचा क्षण आहे,' असे भावस्पर्शी हृदयोद्‌गार ज्येष्ठ विचारवंत व माजी खा.डॉ.श्री.जनार्दनरावजी वाघमारे यांनी काढले.

लातूर येथील आर्य समाज (गांधी चौक) मध्ये महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे डॉ.वाघमारे यांच्यासह एकूण १९ ज्येष्ठ आर्यसमाजी व्यक्तिमत्वांचा जाहीर स्वरुपात गौरव करण्यात आला. यावेळी सत्काराला उत्तर देतांना ते बोलत होते. अध्यक्षस्थानी वयोवृद्ध संन्यासी व थोर समाजसेवक पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती हे होते तर प्रमुख पाहुणे म्हणून बिजनौर (उ.प्र.) येथील वेदप्रचारक पं.मोहितजी शास्त्री व वैदिक विद्वान पं.राजवीर शास्त्री (सोलापूर) उपस्थित होते. स्वामी श्रद्धानंदजींच्या हस्ते डॉ.वाघमारे व इतरांना शाल, श्रीफळ, सन्मानपत्र, स्मृतिचिन्ह व पुष्पहार प्रदान करुन गौरविण्यात आले.

दि.लिं. होळीकर हे मोठे भाऊ

या वेळी डॉ.वाघमारे यांनी आपल्या लहानपणीचा किस्सा सांगितला. ते म्हणाले, ÷चार-पाच मित्र वडवळच्या बेटावर एकत्र येऊन महान होण्याचा संकल्प केला व तो आम्ही जीवनभवर निभावला. त्यात प्रखर सत्यवादी दिगंबरराव होळीकर हे एक दिव्य व्यक्तिमत्त्व × त्यांना मी मोठा भाऊ मानतो. त्यांच्यासारखा चरित्रवान माणूस मी उभ्या आयुष्यात पाहिला नाही.'

आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात डॉ.वाघमारे यांनी याच लातूर आर्य समाज विषयी विद्यार्थी जीवनात आलेल्या घटनांना उजाळा दिला. ते म्हणाले, ÷निजाम

राजवटीचा काळ फारच अन्यायकारक होता. खूपच हलाखीचे दिवस येथील प्रजेला जगावे लागले. अशा प्रतिकूल परिस्थितीत सर्वांना उभारी देण्याचे कार्य आर्य समाजाने केले. अनेक दिग्गज विद्वानांची ओजस्वी व्याख्याने ऐकून आमचा उत्साह वाढत गेला. नवी स्फूर्ती व जोश संचारल्याने आम्हांस महान ध्येय गाठण्यासाठी नवे बळ मिळत गेले, म्हणूनच मी आर्य समाजाला माझी संस्कारशाळा समजतो. या मातृसंस्थेचा सत्कार घेणे ही माझ्यासाठी भाग्याची गोष्ट आहे.'

दिग्गज नेत्यांची भाषणे ऐकली

लातूरात शिकत असताना आम्ही आर्य समाजातील आठवड्याच्या सत्संगात व सभा संमेलनात जात असू. तेथे नेहमी क्रांतिकारी आर्य नेत्यांची भाषणे होत असत. पं.नरेंद्रजी, पं.प्रकाशवीर शास्त्री, पं.रामचंद्रजी देहलवी इत्यादी दिग्गज आर्य समाजी नेत्यांची ओजस्वी व्याख्याने ऐकून आम्हास मोठे स्फूरण चढत असे. उत्तममुनीजी आम्हास संस्काराचे धडे देत. आमच्या शाळेतही त्यांची प्रवचने होत, असे डॉ.वाघमारे म्हणाले.

डॉ.वाघमारे पुढे म्हणाले, ÷स्वामी दयानंदांनी गुरुकुल प्रशिक्षणपद्धतीच्या माध्यमाने विशुद्ध स्वरुपातील प्राचीन आदर्श विचार व ऋषि मुनींची वैचारिक कृतिशील जीवनपध्दती आम्हांसमोर ठेवली. हा संस्काराचा वारसा नेहमीच पुढे नेण्याचा प्रयत्न आर्य मंडळीनी करावा. काळासोबत प्रश्न बदलतात व त्याची उत्तरेही बदलतात, तेंव्हा नव्या आव्हानांचा स्वीकार करुन शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक क्षेत्राला मार्गदर्शन करण्याचे काम आर्य समाजाने हाती घ्यावे.'

या वेळी व्यासपीठावर आर्य सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, मंत्री माधवराव देशपांडे, उपप्रधान राजेंद्र दिवे, उपमंत्री प्रा.देवदत्त तुंगार, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, पं.वेदमुनिजी वेदालंकार, आर्य समाज लातूरचे उपप्रधान ओमप्रकाश पाराशर, मंत्री चंद्रभानू परांडेकर आदी उपस्थित होते. प्रारंभी सभामंत्री श्री देशपांडे यांनी प्रास्ताविक केले. त्यानंतर स्वामी श्रद्धानन्दजींनी डॉ.वाघमारे यांचा गौरव केला. तत्पश्चात अनुक्रमे पं.वेदमुनिजी, प्राचार्य तुंगार, पं.ज्ञानकुमार आर्य, पं.सुधाकरजी शास्त्री, आर्यसेवक श्री.गोविंदराव बंडेवार, पं.गोविंदराव मैंदरकर या प्रत्यक्ष उपस्थित गौरवमूर्तीचा गौरव पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी व श्री.वाघमारे यांनी केला. स्व.मु.अ.दि.लिं.होळीकर व श्रीमती सुभद्राबाई होळीकर यांचा सत्कार त्यांचे जावई प्रा.डॉ.अरुणकुमार मदनसुरे यांनी स्वा.सै.(स्व.) वासुदेवरावजी होळीकर व श्रीमती रुक्मिणीदेवी होळीकरांचा गौरव त्यांचे ज्येष्ठ सुपुत्र प्रा.ओमप्रकाश होळीकर विद्यालंकार यांनी स्व.प्रो.डॉ.चंद्रभानू

सोनवणे व श्रीमती मीरादेवी सोनवणे यांचा गौरव त्यांचे सुपुत्र व शिक्षण संस्थाचालक प्रा.श्री संजीव सोनवणे यांनी, स्व.श्रीमती सुशीलादेवी निवृत्तीराव होळीकर यांचा सत्कार त्यांच्या कन्या श्रीमती मैत्रेयी यती (प्रतिभा पाटील) व सौ.ऊर्मिला आर्य यांनी, स्व.डॉ.कुशलदेवजी शास्त्री यांचा सत्कार त्यांचे मित्र प्रा.नरदेवजी गुडे यांनी, (स्व.)सौ. सुलोचनादेवी वाघमारे यांचा सत्कार डॉ.जे.एम. वाघमारे यांनी, सौ.सवितादेवी जोशी यांचा सत्कार त्यांचे बंधू प्रा.शरदचंद्र डुमणे यांनी, पं.गणेशदेवजी आर्य यांचा सत्कार शहापुर निवासी श्री हनमानलू पुल्लागोर यांनी, प्रा.डॉ.चंद्रकांतजी गर्जे यांचा सत्कार त्यांचे साढू प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी व भाच्ची सौ.संगीता गुप्ता यांनी स्वीकारला. काहींच्या नावे संकलित झालेला गौरव निधी वेदप्रचार कार्यासाठी सभेकडे सोपविण्यात आला. यावेळी गौरवमूर्तीच्या वतीने प्रातिनिधीक स्वरुपात पं.वेदमुनिजी वेदालंकार व प्राचार्य देवदत्त तुंगार यांनी आपले विचार मांडले.

अध्यक्षीय समारोपात स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती यांनी गौरवमूर्ती आर्यसेवक, विद्वान व साहित्यिकांचे जीवन व कार्य हे नव्या पिढीसाठी प्रेरक ठरो, अशी कामना केली. दिवंगत आर्य विभूतींविषयी कृतज्ञता व्यक्त करुन हयात असलेल्या गौरवमूर्तींना दीर्घायुष्य चिंतून त्यांच्याकडून उपकारक कार्य घडावे, अशी अपेक्षा केली. कार्यक्रमाच्या प्रारंभी आर्य कार्यकर्त्यांनी भजने सादर केली. प्रा.डॉ.वीरेंद्र शास्त्री यांनी वैदिक मंगलाचरण केले. गौरवपत्र वाचन डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी केले. सर्व गौरवमूर्तीचा सविस्तर परिचय देत प्रभावीपणे सूत्रसंचालन संयोजक श्री.प्रा.ओमप्रकाश होळीकर यांनी केले, तर आभार राजेंद्र दिवे यांनी मानले. या कार्यक्रमास गौरवमूर्तींच्या कुटुंबियांसह अनेक आर्य महिला व पुरुष उपस्थित होते. कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी आर्य समाज, गांधीचौक च्या पदाधिकाऱ्यांनी प्रयत्न केले.

विशेषांकाचे प्रकाशन

या गौरव समारंभानिमित्त साप्ताहिक लातूर समाचार या नियतकालिकाच्या वतीने काढण्यात आलेल्या आर्य विद्वान, साहित्यिक, उपदेशक व गुरुकुल स्नातिका गौरव या विशेषांकाचे प्रकाशन ज्येष्ठ विचारवंत डॉ.जे.एम.वाघमारे व स्वामी श्रद्धानंदांच्या हस्ते झाले. यावेळी डॉ.वाघमारे यांनी संपादक दयानंद जडे यांचा सत्कार केला. या विशेषांकात गौरवमूर्तीच्या जीवन व कार्याचा संक्षिप्त स्वरुपात परिचय करुन देणारी माहिती प्रसिद्ध झाली आहे. तसेच गांधी चौक लातूरच्या आर्य समाजाची ऐतिहासिक माहिती लेखाच्या माध्यमाने वाचकांसमोर मांडण्यात आली आहे.

वार्ताविशेष वैदिक पद्धतीने परभणीत होळी साजरी

पारंपारिक चालीरीती व रंग उधळून प्रदूषण वाढविण्याच्या प्रथेला मुरड घालीत परभणी येथील आर्य समाजाच्या वतीने वैदिक विचारांना अनुसरुन विशुद्ध पद्धतीने ÷होळी' हा पर्व आनंदाने साजरा करण्यात आला. धुलिवंदनदिनी सकाळी पं.दयानंद आर्य व पं.दिगंबर देवकते (शास्त्री) यांच्या पौरोहित्याखाली पार पडलेल्या नवान्नेष्टि यज्ञात सौ.व श्री बिर्ला, सौ.व श्री अग्रवाल, सौ.व श्री जगदाळे हे यजमान सहभागी झाले. त्यानंतर पं.देविदासराव तळणीकर महाराजांचे कीर्तन तर पं.लक्ष्मणराव आर्य यांचे प्रवचन पार पडले. यावेळी परळीचे श्री जयकिशोर दोडिया व स्थानिक श्री बाबुराव आर्य, सौ.लीलावती जगदाळे आदींनी भजने सादर करुन वातावरण प्रफुल्लित केले. पं.लक्ष्मणराव आर्य यांनी या पर्वास मातृभूमीच्या धूलीकणांना वंदन करुन तिच्या रक्षणासाठी सदैव तत्पर राहण्याचे आवाहन केले. विजयकुमार अग्रवाल व स्वामी सम्यक क्रांतिवेश यांनीही मार्गदर्शन केले. शेवटी फुलांचा वर्षा करुन आनंद व्यक्त करण्यात आला.

परळी मेडिकल असो.च्या अध्यक्षपदी डॉ.काळे

आर्य परिवारातील सदस्य व प्रसिद्ध अस्थिरोगतज्ज्ञ डॉ.श्री मधुसूदन सुग्रीव काळे यांची नुकतीच परळी मेडिकल असोसिएशनच्या अध्यक्षपदी निवड झाली आहे. कार्यकारिणीच्या बैठकीत सदस्यांनी त्यांची सर्वसंमतीने बिनविरोध निवड केली. या निवडीबद्दल डॉ.काळे यांचा परळी आर्य समाजातर्फे नववर्षदिनी आयोजित विशेष कार्यक्रमात प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया यांच्या हस्ते शाल, पुष्पहार व श्रीफळ प्रदान करुन सत्कार करण्यात आला.

त्याचबरोबर दि.५ एप्रिल रोजी मराठवाडा साहित्य परिषदेच्या वतीने आयोजित ÷चैत्र चाहूल कार्यक्रमा'तही ज्येष्ठ साहित्यिक प्रा.लक्ष्मीकांत तांबाळी यांच्या शुभहस्ते डॉ.काळे यांचा सत्कार करण्यात आला. श्री काळे हे महाराष्ट्र

आर्य प्र.सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी (सुग्रीव काळे) यांचे ज्येष्ठ सुपुत्र असून बालपणापासूनच आर्य विचारांच्या संस्कार छायेत वाढलेले आहेत. ते परळी परिसरातील हाडाचे एक नामवंत तज्ज्ञ सर्जन असून मॅरेथॉन सायकलींग सारखे उपक्रमही राबवितात. या निवडीबद्दल आर्य समाज व कार्यकर्त्यांकडून त्यांचे अभिनंदन ×

संभाजीनगर येथे ÷आर्य वीरांगना संस्कार शिबिर'

मुलींचा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक व सामाजिक विकास होऊन त्यांचे भावी जीवन वैदिक सत्य विचारांनी सुसंस्कारित व्हावे, तसेच त्यांना भविष्यात जीवन जगण्यासाठी सुयोग्य दिशा मिळावी, या पवित्र उद्देशाने संभाजीनगर (औरंगाबाद) येथील श्री संत ज्ञानेश्वर वेदविद्याप्रतिष्ठाण, दत्तधाम(हर्सुल तलावाच्या पूर्वेला) येथे येत्या २ ते ९ मे २०१७ दरम्यान भव्य स्वरुपात **÷आर्य वीरांगना संस्कार शिबिरा**'चे आयोजन करण्यात आले आहे.

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या मार्गदर्शनाखाली आर्य समाज गारखेडा, औरंगाबाद (संभाजीनगर) च्या वतीने आयोजित या विशाल कन्या संस्कार शिबिरात १५ ते २२ वयोगटातील विद्यार्थीनींना प्रवेश देण्यात येणार असून प्रवेश शुल्क रु.५००/- ठेवण्यात आले आहे. या शिबिरात दिवसभराच्या व्यस्त दिनचर्येत व्यायाम, योगासने, कराटे, लाठी, भाला, छुरी, तलवार, रायफल, मल्लखांब यांचे प्रशिक्षण मिळणार असून ईश्वर, धर्म, संस्कृती, भारतीय तत्त्वज्ञान, वेदांचा स्त्रियांविषयीचा दृष्टिकोन, वर्ण व आश्रम व्यवस्था, विद्यार्थी जीवन, सुसंस्कार, आदर्श दिनचर्या, खानपान आदी विषयांवर विविध विद्वानांचे बौद्धिक मार्गदर्शन लाभणार आहे. प्रसिद्ध विद्वान आचार्य श्री धर्मवीरजी आर्य व त्यांच्या तीन कन्या कु.सृष्टी, कु.दीपिका, कु.जिया यांच्या प्रमुख मार्गदर्शनाखाली हे शिबिर होत आहे. तरी पालकांनी मुलींना या शिबिरात अधिकाधिक संख्येने पाठवावे, असे आवाहन आर्य समाज गारखेडाचे प्रधान प्रा.रमेश ठाकुर, उपप्रधान रमेश पांडव, डॉ.खुशालचंद बाहेती, मंत्री अंजू माने, उपमंत्री मुनिश शर्मा, कोषाध्यक्ष ज्योती तोष्णीवाल, डॉ.लक्ष्मण माने आदींनी केले आहे. अधिक माहितीसाठी

इच्छुकांनी रमाकांत देसाई- ९४२१७१००२३ व जुगलकिशोर गट्टाणी- ९४२१५२१५०८ यांचेशी संपर्क करावा. शिबिराच्या आयोजनाची जय्यत तयारी सध्या सुरु असून कार्यकर्ते प्रयत्नशील आहेत.

शिवणखेडला आर्य भवनाचे उद्घाटन व वेद प्रचार

लातूर जिल्ह्याच्या ग्रामीण परिसरातील क्रियाशील आर्य समाज म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या चाकुर तालुक्यातील शिवणखेड (बु.)गावच्या आर्य समाजाच्या वतीने येत्या दि.२८, २९ व ३० एप्रिल २०१७ रोजी भव्य स्वरुपात वेदप्रचार कार्यक्रमाचे आयोजन होत आहे. दि.३०ला माजी आमदार बब्रुवान खंदाडे यांच्या आमदार फंडातून बांधण्यात आलेल्या आर्य समाजाच्या नव्या भवनाचे उद्घाटन होणार आहे. नव्या वास्तुचे उद्घाटन तपस्वी संन्यासी व समाजसेवक पू.स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती यांच्या हस्ते होणार असून प्रमुख पाहुणे म्हणून माजी आ.बब्रुवाहन खंदाडे, विद्यमान आ.विनायकराव पाटील, जिल्हा परिषद सदस्य सुधाकर श्रृंगारे, माजी सभापती ॲड.माधवराव कोळगावे हे उपस्थित राहणार असून या कार्यक्रमास विशेष अतिथी म्हणून महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी व मंत्री माधवराव देशपांडे हे सहभागी होत आहेत. तीन दिवस चालणाऱ्या या कार्यक्रमात दररोज सकाळी ७ ते ८ वा. यज्ञ, ९ ते १२ भजन व प्रवचन, दुपारी ३ ते ५ वा. महिला सम्मेलन, तर रात्रौ ७ ते १० वा. भजन व प्रवचनाचे कार्यक्रम होतील. या दरम्यान दि.२९ ला सामुहिक उपनयन संस्कार कार्यक्रमाचे आयोजन होत आहे. या सर्व कार्यक्रमांसाठी वैदिक विद्वान व भजनोपदेशक बरेली(उ.प्र.) येथून पं.विमलदेव अग्निहोत्री, पुणे येथील पं.सुधाकर शास्त्री, तसेच सर्वश्री पं.लक्ष्मणराव आर्य, सोममुनिजी, पं.प्रतापसिंहजी चौहान, प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य, सौ.वसुंधरा गुडे, पं.श्री चंदेश्वरजी व सौ.कांचनदेवी शास्त्री यांना आमंत्रित करण्यात आले आहे.

तरी कार्यक्रमास बहुसंख्येने उपस्थित राहावे असे आवाहन व्यंकटराव कुल्ले, प्रधान श्री विजयपाल कुल्ले, मंत्री बब्रुवाहन शिंदे, किशनराव शिंदे, वैजनाथराव हांलीगे तसेच कार्यकर्त्यांनी केले आहे.

शोकवार्ता

लक्ष्मणराव कारनाळे (कुंभार) यांचे निधन

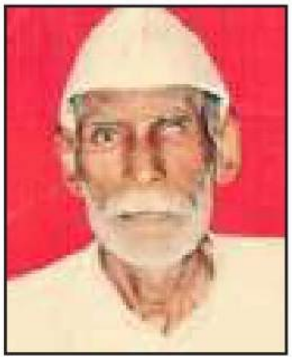

गांजूर ता.चाकुर जि.लातूर येथील आर्य समाजाचे प्रेरणास्थान व सर्वप्रिय असे अजातशत्रू आर्य व्यक्तिमत्व श्री लक्ष्मणराव संतोबा कारनाळे (कुंभार) यांचे वयाच्या ८२व्या वर्षी दि.२३ मार्च (गुरुवार) रोजी दुपारी २.३० वा. च्या सुमारास वृद्धापकालीन अवस्थेमुळे अल्पशा आजाराने दु:खद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी सौ.कुसुमबाई, दोन मुले चि.शिवमूर्ती व चि.शिवलिंग तसेच ४ विवाहित कन्या असा परिवार आहे. श्री कारनाळे धार्मिक, सच्छील, सेवाभावी, प्रांजळ मनाचे व प्रखर आर्य सिद्धांतनिष्ठ असे महर्षी दयानंदांचे कर्मठ अनुयायी होते. गाव व परिसरात एक भला सद्गृहस्थ व आर्य समाजी विचारांचा पुरस्कर्ता म्हणून त्यांची ओळख होती. अत्यंत साधेपणाचे जीणे जगत आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसाराची तळमळ बाळगणारे धार्मिक व्यक्तिमत्व म्हणूनही ते परिचित होते. आर्य समाजाच्या विविध ठिकाणच्या उत्सवात, सभा-संमेलनात व कार्यक्रमात श्री कुंभारमामा श्रद्धेने सहभागी होत असत. त्यांच्या प्रयत्नातूनच ४ वर्षापूर्वी गांजूर गावामध्ये आर्य समाजाची स्थापना झाली. त्यानिमित्त भव्य असा कार्यक्रम ही घेतला होता.

दिवंगत श्री कारनाळे यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी (दि.२४) पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सुगावचे वैदिक पंडित श्री अशोकराव कातपुरे, शिवणखेड आर्य समाजाचे प्रधान श्री विजयपाल कुल्ले, आर्य कार्यकर्ते भागवत आरदवाड, विद्यासागर आरदवाड, पंढरीनाथ चामे आदींनी हा अंत्यविधी संपन्न केला. पं.नयनकुमार आचार्य व पं.लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांनी सर्वांतर्फे श्रद्धांजली अर्पण केली.

दिवंगत आत्म्यास महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व समस्त आर्य समाजांतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली. कारनाळे कुटुंबियांच्या सर्व आर्य कार्यकर्ते सहभागी आहेत.

आर्य कृतज्ञता गौरव समारोह, लातूर २०१७

समारोह के प्रमुख अतिथि पं.राजवीरजी शास्त्री(सोलापुर) का सत्कार करते हुए सभा के कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर।

आर्य कृतज्ञता गौरव समारोह का सुव्यवस्थित संचालन करते हुए समारोह के संयोजक व सभा के पुस्तकाध्यक्ष प्रो.श्री ओमप्रकाशजी होलीकर।

धन्यो गृहस्थाश्रमः।

जीवेत शरदः शतम्।

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं कीर ।।

वैदिक धर्म के प्रचार कार्य में तन-मन-धन से समर्पित आर्यसमाज परली के उत्साही दानशूर आर्यदम्पती

सौ.सरोज देवी एवं जयकिशोर दोडिया

व परिवार द्वारा

÷वैदिक गर्जना' मासिक के इस अंक का रंगीन मुखपृष्ठ सप्रेम भेंट×

REG.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,

श्री

प्रेषक -

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज, परली-वैजनाथ

पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' के संपर्क कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया ।